आसार ए क़यामत

मुसन्निफ

ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा

अख़्तर रज़ा खां कादरी मद्दज़िल्लहू

तर्जुमा

मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी

www.jannatikaun.com

आसार-ए-क़यामत

मुसन्निफ़

ताजुश्शरीआ़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती **मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ** क़ादरी

अजहरी बरेलवी मद्दजिल्लहू

JANNATI KAUN?

—: तरतीब :—

मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुर्रहीम नश्तर फ़ारूक़ी

—: हिन्दी तर्जमा :—

मौलाना मुहम्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी

नम्बर शुमार		सफ़ा नम्बर
1.	तक़दीम	5
	आसर–ए–क़यामत	
2.	जब लोग नमाज़ को ज़ाए करने लगें	15
3.	जब अमानत राइगाँ कर दी जायें	19
4.	जब सूद ख़ोरी की जाने लगे	25
5.	जब रिश्वत का लेन देन होने लगे	26
6.	जब कुर्आन को गाना ठहरा लिया जाये	28
7.	जब औलाद दिल की घुठन हो जाये	35
8.	जब उ़लमा अहले सरवत के लिये सीनो पर हाथ बाँधे झुकें	38
9.	जब मस्जिदें आरास्ता की जायें	47
10.	जब महीने घट जायें	50
11.	जब औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें	55
12.	जब औ़रतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें	57
13.	जब ग़ैरूल्लाह की क़सम खाई जाये	64
14.	जब आदमी बग़ैर त़लब के गवाही में सबक़त करे	77
15.	जब ओ़हदे मीरास हो जायें	78
16.	जब औ़रतें औ़रतों पर और मर्द मर्दों पर इक्तिफ़ा करें	79

JANNATI KAUN?

अर्ज़े मुतर्जिम

ज़ेरे नज़र किताब "आसारे क़यामत" जैसा कि नाम से ज़ाहिर है क़यामत की निशानियों के मौज़ू पर मुन्फ़रिद किताब है जिसे पीर व मुर्शिद ताजुश्शरीआ अल्लामा अख़्तर रज़ा ख़ाँ साहब क़िब्ला जानशीने मुफ़्तिए आज़म ने तस्नीफ़ फ़रमाया है।

काफ़ी अर्सा से ख़्वाहिश थी कि अल्लामा मौसूफ़ की किताब जो उर्दू जानने वाले कारेईन में बहुत मशहूर व मक़बूल हो चुकी है हिन्दी में शाए करा दिया जाये ताकि हिन्दी दाँ हज़रात इस किताब से फ़ाइदा हासिल कर सकें।

मेरी ख़्वाहिश को तक़वियत उस वक़्त मिली कि जब मेरे बहुत सारे अहबाब ने मुझ से कहा कि हज़रत की किताब हिन्दी ज़बान में शाए करा दी जाये।

तर्जमा करने में कोशिश यह की गई है कि किताब के अलफ़ाज़ बि ऐनिही हिन्दी में लिख दिये जायें ताकि हिन्दी दाँ हज़रात को पढ़ने में लज़्ज़त व तबर्रुक हासिल कर सकें बअ़ज़ जगह मुश्किल अलफ़ाज़ आसान हिन्दी के ब्रेकिट में लिख दिए गये है ताकि हिन्दी पढ़ने वाले आसानी से समझ सके।

आख़िर में तमाम ही कारेईन से गुज़ारिश है कि इस किताब को हिन्दी में पेश करने में कहीं कमी,या ग़लती पायें तो मुतर्जिम की कम इल्मी समझते हुए अफ़्व व दर गुज़र से काम लें और साथ ही साथ ख़ादिम को मुत्तला करें ताकि अगले एडीशन में उस को दुरुस्त कर लिया जाये।

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ है कि "आसारे क़यामत" उर्दू की तरह हिन्दी में भी मक़बूले आम फ़रमाये और लोगों को इस से फ़ायदा हासिल करने की तौफ़ीके रफ़ीक अता फ़रमाये और मेरे लिए निजात का ज़रीआ बनाये।

आमीन बतुफ़ैले सय्यिदिलमुरसलीन

गुलामे ताजुश्शरीआ
मुहम्मद अमीनुल कादरी बरेलवी
दिसम्बर 2009 मोबाइल न. 09219132423

तक़दीम

क़यामत बर हक़ और इस्लाम का एक बुनियादी अक़ीदा है बे शक वह अपने मुअ़य्यना वक़्त पर आयेगी और जरूर आयेगी। चुन्नाँचे इरशाद बारी तआ़ला है :–

اِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ . यअ़नी "बे शक क़यामत आने वाली है"

जो शख़्स क़यामत का इन्कार करे या उस में ज़र्रा बराबर शक करे वह काफ़िर और ख़ारिज अज़ इस्लाम है(यअ़नी मुसलमान नहीं रहा)

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को उन के अच्छे बुरे अअ़माल की सज़ा व जज़ा देने के लिये एक ख़ास दिन मुक़र्रर कर रखा है जिस दिन वह नेको कारों(नेक लोगों)को जन्नत की नेअ़मतें और बदकारों को जहन्नम का अज़ाब देगा उ़र्फ़ शरअ़ में उसी दिन का नाम "**क़यामत**" है

क़यामत की तीन क़िस्में हैं :

1–क़यामते सुग़रा(छोटी क़यामत)

2–क़यामते वुस्ता(दर्मियानी क़यामत)

3–क़यामते कुबरा(बड़ी क़यामत)

JANNATI KAUN?

क़यामते सुग़रा मौत को कहते हैं "**من مَات فَقَدْ قَامَتْ قيامته**" यअ़नी " जो मरगया उस की क़यामत होगई"।

क़यामते वुस्ता यह है कि किसी एक क़र्न (ज़माने)के सारे लोग मरजायें फिर दूसरे क़र्न के नये लोग पैदा हो जायें।

क़यामते कुबरा उस दिन को कहते हैं जिस दिन आसमान व ज़मीन और जो कुछ उस में है सब फ़ना हो जायेंगे।(अलमलफूज हि 3 स 49)

क़यामत कब कितने दिनों के बअ़्द और किस सन में आयेगी? उस का इल्म अल्लाह तआ़ला ने सिवाये हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के तमाम बन्दों से पोशीदा रखा और ख़ुद हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को यह हुक्म हुआ कि क़यामत बरपा होने का सन वग़ैरा अपनी उम्मत से छुपाये रखें।

चुनाँचे "हाशिया सावी अ़ला तफ़सीरिलजलालैं" में है :

أنه اطلع على الجنة وما فيها والنار وما فيها وغيره ذلک مما تواترت به الأخبار ولكن أمر بكتمان البعض.

"यअ्नी अल्लाह जल्ल शानुहू ने नबी करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को जन्नत व दोज़ख और उन के दाख़िली उमूर वग़ैरा सारे मुआमलात पर इत्तिलाअ् बख़्शी लेकिन बअ्ज़ असरार (राज)को पोशीदा रखने का हुक्म फ़रमाया, इस सिलसिले में अख़्बारे नबवी तवातुर की हद तक मरवी हैं "(जि. सानी स. 104)

लिहाज़ा हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपने किसी भी उम्मती को यह नहीं बताया कि क़यामत कब कितने दिनों के बअ़द और किस सन में आयेगी ? अलबत्ता क़यामत के सन के सिवा क़यामत का महीना क़यामत की तारीख़ और क़यामत का दिन यह सब कुछ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को बता दिया चुनाँचे आज दुनिया का बच्चा बच्चा यह जानता है कि क़यामत मुहर्रम के महीने में दसवीं तारीख़ को जुमआ़ के दिन ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान आयेगी।

ईसा अ़लैहिस़्स़लातु वस्सलाम के विसाल के बअ्द जब क़यामत की वह ख़ुश्बू दार हवा गुजर चुकेगी जिस से तमाम मोमिनीन की रूहें बाआसानी परवाज़ कर जायेंगी सिर्फ़ काफ़िर ही काफ़िर बचेंगे फिर उन काफ़िरों पर चालीस साल का एक ऐसा ज़माना गुज़रेगा जिस में किसी को औलाद न होगी,किसी की उ़म्र चालीस साल से कम न होगी किसी को भी वुक़ूअे क़यामत की परवाह न होगी। कोई खाना खा रहा होगा, कोई पका रहा होगा, कोई दीवार लेप रहा होगा, कोई हल चला रहा होगा, ग़र्ज़ कि सारे लोग अपने मअ्मूल के कामों में मश्ग़ूल व मुन्हमिक होंगे कि दफ़अ़तन हज़रत इसराफ़ील अ़लैहिरसलाम को स़ूर फूँकने का हुक्म होगा।

शरूअ् शुरूअ् में उस की आवाज़ बहुत बारीक और सुरीली

होगी और रफ़्ता रफ़्ता बहुत बलन्द और भयानक होती जायेगी लोग कान लगा कर उस की आवाज़ सुनेंगे। बे होश हो कर गिर पड़ेंगे और मर जायेंगे आसमान टुकड़े, टुकड़े हो कर बिखर जायेगा ज़मीन में इतना ज़बरदस्त ज़लज़ला और खौफ़नाक भूँचाल आयेगा कि ज़मीन काँपने लगेगी पहाड़ रेज़ा, रेज़ा हो कर गर्द व गुबार की तरह उड़ने लगेगा। चाँद व सूरज और सितारे बे नूर हो कर झड़जायेंगे यहाँ तक कि सूर और हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम भी फ़ना हो जायेंगे।

उस वक़्त दुनिया में उस वाहिदे हक़ीक़ी के सिवा कोई न होगा वह फ़रमायेगा:

لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ "यअ़नी आज किस की बादशाही है ?

कहाँ हैं जोर व सितम (ज़ुल्म) करने वाले ? मगर वहाँ कोई होगा ही नहीं जो कुछ जवाब दे फिर अल्लाह वाहिदुलक़हहार वलजब्बार खुद ही इरशाद फ़रमायेगा:

لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ यअ़नी आज सिर्फ़ अल्लाह वाहिद क़ह्हार की सलतनत है" (पारा 24 / सूरए मोमिन आयत 15)

फिर जब अल्लाह चाहेगा हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा फ़रमायेगा और सूर को पैदा कर के दो बारा फूँकने का हुक्म देगा सूर फूँकते ही तमाम अव्वलीन व आखिरीन जिन्न व मलाइका, इनसान व हैवान गर्ज़ कि तमाम जानदार मखलूक़ात ज़िन्दा हो जायेंगे।

उस दिन सब से पहले मुसतफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस कर्र व फ़र (शान) के साथ अपनी क़ब्रे अनवर से बर आमद होंगे कि आप के दायें हाथ में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ होगा और बायें हाथ में हज़रत फ़ारूक़े अअ़ज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ होगा फिर उस के बअ़द हुज़ूर मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के मक़ाबिर में जितने

भी मुसलमान होंगे सब को ले कर मैदाने महशर में तशरीफ़ ले जायेंगे जो सर ज़मीने मुल्के शाम पर मुन्अ़क़िद (क़ाइम) होगा।

क़यामत के आने से पहले बहुत से अ़लामत व आसारे क़यामत का ज़ुहूर होगा जिन का तफ़सीली इ़ल्म रब्बुलइ़ज़्ज़त ने अपने प्यारे हबीब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को अ़ता फ़रमाया और आप ने वह अ़लामतें अप़नी उम्मत पर आश्कार(ज़ाहिर) फ़रमादीं।

चुनाँचे ह़ज़रत ह़ुज़ैफ़ा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते है :

"قام فينا رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه و سلم مقاما ترک شيئا يكون فى مقامه ذلک الى قيام الساعة الا حدث به حفظه من حفظه و نسيه من نسيه قد علمه اصحابى هٰؤلاء وانه ليكون منه الشئ قد نسيته فأراه فاذكره كما يذكر الرجل وجه الرجل اذا غاب عنه ثم اذا رأه عرفه.

यअ़नी "एक मरतबा रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने खड़े हो कर क़यामत तक पेश आने वाली हर चीज़ बतादी जिसे मेरे यह साथी जानते हैं फिर जिस ने उन्हें याद रखा सो याद रखा और जो भूल गया सो भूल गया जब कोई बात वाक़ेअ़ होती तो मेरे उन साथियों में से कोई बता देता जिस को मैं भूल गया होता तो मुझे ऐसे याद आजाती जैसे किसी ग़ाइब आदमी का चेहरा बयान किया जाता और मैं देख कर उसे पहचान लेता (मिश्कात शरीफ़ स़ 461)

बिला शुबह यह पेशीन गोईयाँ(भविष्य वाणी) ह़जूर पुर नूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बे इन्तिहा समन्दरे इ़ल्म का एक क़तरा और "وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ" का एक छोटा सा नमूना हैं।

इन पेशीन गोइयों और अ़लामतों की दो क़िस्में हैं एक" अ़लामाते सुग़रा" यअ़नी छोटी निशानियाँ और दूसरी "अ़लामाते कुबरा"यअ़नी बड़ी निशानियाँ।

अलामाते सुग़रा वह निशानियाँ हैं जिन का जुहूर क़यामत आने से बहुत पहले ही होने लगेगा और अलामाते कुबरा वह निशानियाँ हैं जो क़यामत के बिल्कुल क़रीब ज़ाहिर होंगी।

ज़ेरे नज़र "अलामाते सुग़रा" से मुतअल्लिक़ "कन्जुल उम्माल" की एक ऐसी हदीस पर मुश्तमिल है जो तक़रीबन क़यामत की 72 निशानियों को मुहीत है।

मुरशिदी ,व उस्ताज़ी हुज़ूर ताजुश्शरीआ हज़रत अल्लामा अलहाज अश्शाह मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ाँ क़ादरी अज़हरी बरेलवी मद्दजिल्लाहुन्नूरानी ने सब से पहले उस हदीसे पाक का सलीस तर्जमा फ़रमाया है उस के बअ़द सिर्फ़ उन आसार व अलामात (निशानियों)पर कलाम फ़रमाया है जो आम फहम न थे और जो अलामात आम फ़हम और वाज़ेह थी उन का तर्जमा ही उस अन्दाज़ में फ़रमाया है कि मज़ीद किसी तशरीह व तौज़ीह की ज़रूरत ही बाक़ी नहीं रही है।

JANNATI KAUN?

हुज़ूर ताजुश्शरीआ ने जिन अलामात व आसार की तशरीह व तौज़ीह की है उन्हें ख़ास तौर पर उन की ताईद अहादीसे करीमा ही से वाज़ेह फ़रमाया है इस तरह यह किताब "आसारे क़यामत" पर मुश्तमिल हदीसों का एक मबसूत और नादिर व दिल आवेज़ गुलदस्ता बन गई है नीज़ उस किताब में आप ने "आसारे क़यामत" से मुतअल्लिक़ बेश्तर उन गोशों को आश्कार(ज़ाहिर)फ़रमाया है जो अब तक आम लोगों की नज़रों से ओझल थे।

इस किताब की सब से बड़ी खूबी यह है कि उस में जो भी बात कही गई है उसे हवालों से मुदल्लल बयान किया गया है। मज़ीद राक़िम ने उन हवालों की तख़्रीज के साथ साथ उन की अस्ल इबारतें भी नक़्ल करदी हैं जिस से पढ़ने वालों के लिए यह आसानी पैदा होगई है कि वह जब चाहें उन के माख़ज़ व मराजेअ़ की तरफ़

रुजूअ़ कर सकते हैं।

राकिम ने किताब में बअ़ज़ मक़ामात पर हाशिये का भी इज़ाफ़ा कर दिया है मक़सद यह है कि क़ारी के लिये" आसारे क़यामत" से मुतअ़ल्लिक़ ज़्यादा से ज़्यादा मअ़लूमात फ़राहम कर दी जायें ताकि उन से इबरत हासिल करते हुए अपने शब व रोज़ गुज़ारे जायें।

अल्लाह तबारक व तआ़ला जुमला मुआ़वेनीन को जज़ा–ए–ताम अ़ता फ़रमाये और इस किताब को मक़बूले ख़ास़ व आ़म ज़रीआ़ –ए–रुश्द–व हिदायत अनाम और आख़िरत में मुझ नाचीज़ के लिये सबबे ग़ाफ़िर असाम(गुनाहों से बख़्शिश का सबब) बनाये! आमीन बिजाहि सय्यदिलमुरसलीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम व अ़ला आलिही व अस़हाबिही अजमईन।

मुहम्मद अ़ब्दुर्रहीम नश्तर फ़ारूक़ी ख़ादिम मरकज़ी दारूलइफ़ता 82/ सौदा गरान रजा नगर बरेली शरीफ़ यूपी।

JANNATI KAUN?

بسم اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيم
نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيم

عن زيد بن و اقد عن مكحول عن على قال قال رسول الله صلى الله تعالیٰ عليه وسلم :من اقتراب الساعة اذا رأيتم الناس أضا عوا الصلاة ،و أضاعوا الأ مانة،و استحلوا الكبائر،و أكلوا الربا،و أخذ و الرشیٰ ،و شيدوا و االبناء،و أتبعوا الهوى، و باعوا الدين بالدنيا،و اتخذوا القرآن مزامير، و اتخذوا جلود السباع صفافاً ،و المساجد طرقا و الحرير لباسا،و كثر الجور، و فشا الزنا،و تهاونوا بالطلاق ،و ائتمن الخائن،و خون الأمين، و صار المطر قيظا،و الولد غيظا و أمراء فجرة ،و و زراء كذبة ،وأمناء خونة ،و عرفاء ظلمة ،و قلت العلماء،و كثرت القراء،و قلت الفقهاء،و حليت المصاحف و زخرفت المساجد،و طولت المنابر،و فسدت القلوب،و اتخذوا القينات ،و استحلت المعازف،و شربت الخمور،و عطلت الحدود،و نقصت الشهور،و نقضت المواثيق ،و شاركت المرأة زوجها فى التجارة ،و ركب النساء البراذين ،و تشبهت النساء بالرجال و الرجال بالنساء،و يحلف بغير الله ،و يشهد الرجل من غير أن يستشهد، و كانت الزكاة مغرما،و الامانة مغنماً ،و أطاع الرجل امرأته و عق أمه و أقصى أباه و صارت الامارات مواريث،و سب آخر هذه الأمة اولها، و أكرم الرجل اتقاء شره،و كثرت الشرط ،و صعدت الجهال المنابر و لبس الرجال التيجان ،و ضيقت الطرقات ،و شيد البناء و استغنى الرجال بالرجال و النساء بالنساء،و كثرت خطباء منابر كم،و ركن علمائكم الى ولاتكم فاحلوا لهم الحرام و حرموا عليهم الحلال و أفتوهم بما يشتهون، و تعلم علماؤ كم العلم ليجلبوا به دنا نير كم و دراهمكم و اتخذتم القرآن

تجارة ،و ضيعتم حق الله فى اموالكم،و صارت أموالكم عند شرار كم،و قطعتم أر حامكم،و شربتم الخمور فى ناديكم و لعبتم بالميسر ،و ضربتم بالكبر و المعرفة و المزامير،و منعتم محاويجكم زكاتكم و ر أيتموها مغرما،و قتل البرئ ليغيظ العامة بقتله و اختلفت أهواؤكم ،و صار العطاء فى العبيد والسقاط،و طفف المكائيل و الموازين و وليت أمور كم السفهاء (أبو الشيخ فى الفتن و عويس فى جزئه و الديلمى) (كنز العمال، جلد۱۴/ص ۵۷۳،۵۷۴)

"हज़रत ज़ैद इब्ने वाकि़द से रिवायत है,उन्हों ने मक्हूल से रिवायत की,उन्होंने मौला अ़ली कर्रमल्लाहु वजहुलकरीम से रिवायत की। फ़रमाया रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कि कुर्बे कयामत(क़यामत के क़रीब) की निशानियों में से है,जब तुम देखो लोगों ने नमाज़ को ज़ाए कर दिया, और अमानत को राइगाँ(बर्बाद) कर दिया, और कबीरा गुनाहों को हलाल ठहराया, और सूदख़ोरी और रिश्वत सतानी(रिश्वत का लेन देन) की, और मकान पुख़्ता बनाये, और ख़्वाहिशों की पैरवी की, और दीन को दुनिया के बदले बेचा, और कुर्आन को [1] गाना ठहरा लिया, और जब तुम देखो लोगों ने [2] दरिन्दों की खालों को बत़ौर जीन इस्तिअ़्माल किया, और

1.यअ़नी गाने के तौर पर उतार चढाओ के साथ कुर्आन पढ़ेंगे या साज़ के साथ कुर्आन की तिलावत करेंगे और गालिबन यह पिछली बात भी वाकेअ़् हो गई और पहली तो कुर्रा–ए–जमाना में आम है. (अजहरी गुफिरलहू)

2.इस से शेर वगैरा की खाल पर बैठने से मुमानअ़त(इन्कार)मअ़लूम होती है और यह मुमानअ़त बअ़ज हदीसों में वारिद हुई और अगर उस से मकसूद फख्र व मुबाहात हो तो उस से मुमानअ़त उस की तहरीम(हराम होने का) का फायदा देगी) (अजहरी गुफिरलहू)

मस्जिदों को रास्ता बनालिया और मर्दों ने रेशम को पहनावा ठहरा लिया, और जब जुल्म ज़्यादा हो, और ज़िना आम हो और तलाक़ मअ़मूली बात समझी जाये और खाइन के पास अमानत रखी जाये और अमीन को ख़ाइन ठहराया जाये, और बारिश बाइ़से–ए–[1] शिद्दते गर्मी हो जाये, और जब औलाद दिल की घुटन हो जाये,और बदकार उ़मरा और झूटे वज़ीर, और ख़ाइन अमीर, और ज़ालिम मुहतसिब हों, और उ़लमा अहले सरवत के लिए सीनों पर हाथ रख कर झुकें और कुर्रा ब–कसरत हों और फुक़्हा की क़िल्लत हो, और मुसाहफ़ सोने चाँदी से मुज़ैयन किये जायें, और मस्जिदें आरास्ता की जायें और मिम्बर दराज़ किये जायें और दिल फ़ासिद हो जायें, और लोग गाने वालियाँ रखें, और बाजे हलाल ठहराये जायें, और शराबें पी जायें और अल्लाह के हुदूद मुअ़त्तल किये जायें, और महीने घट जायें और अ़हद व पैमान तोड़े जायें, और औरत अपने शौहर की तिजारत में शरीक हो, और औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें और औरतें मर्दों से और मर्द औरतों से मुशाबहत करें,और ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई जाये, और आदमी गवाही में सब्क़त करें बग़ैर उसके कि गवाही तलब की जाये, और ज़कात तावान ठहरे, और अमानत माले ग़नीमत, और मर्द अपनी बीवी की इताअ़त करे, और माँ की नाफ़रमानी करे, और बाप को दूर रखें, और ओहदे मीरास हो जायें, और इस उम्मत के पिछले लोग अगलों को [2] गालियाँ दें और आदमी की इ़ज़्ज़त उस के शर के डर से हो और सिपाहियों की क़सरत हो, और जाहिल मिम्बर पर चढ़ें, और मर्द ताज पहनें, और रास्ते तंग हों, और रिहाइश के मकान ऊँचे पुख़्ता

1.ग़लिबन मतलब यह है कि बारिश कम हो और ख़ुश्क साली आम हो,या बारिश का असर यअ़नी सबज़ा और खुन्की हवा मुरत्तब न हो (अजहरी ग़ुफ़िरलहू)

2.इस के मिस्दाक़ की ज़मानिना राफ़ज़ी,ख़ारिजी,वहाबी,देवबन्दी,नेचरी,क़ादयानी वग़ैराहुम और उन जैसे दीगर फ़िरक़हा–ए–बातिला है (अज़हरी ग़ुफ़िरलहू)

बनें, और मर्द मर्दों पर, और औरतें औरतों पर इक्तिफ़ा करें, और तुम्हारे मिम्बर के ख़तीब ब–कसरत हों, और तुम्हारे उलमा तुम्हारे वालियों की तरफ झुकें, तो उन के लिये हराम हलाल ठहरा दें, और हलाल को हराम करदें, और उन को मन चाहा फ़तवा दें और तुम्हारे उलमा इल्म इस लिए सीखें कि तुम्हारे रईसों के दीनार व दिरहम इकट्ठा करें, और तुम कुर्आन को तिजारत ठहरा लो, और तुम्हारे मालों में जो अल्लाह का हक़ है उसे ज़ाए कर दो, और तुम्हारे माल तुम्हारे अशरार के क़ब्ज़ो में हों, और तुम अपने रिश्तों को काटो, और अपनी मज्लिसों में शराबें पियो, और जुआ खेलो, और तब्ला बजाओ और मज़ामीर के आलात बजाओ, और अपने मोहताजों को अपनी ज़कात न दो, और ज़कात को तावान समझो और बे गुनाह का कत्ल होता कि आम लोग उस के कत्ल से घटें, और तुम्हारे ख़्यालात मुख़्तलिफ़ हों, और बख़्शिशें गुलामों में और कम मरतबा लोगों में आम हों,और पैमाने और तराजुएँ कम (1) हों और तुम्हारे उमूर के वाली बेवकूफ़ लोग हों।

JANNATI KAUN?

1.यअ्नी कम तोलने का रिवाज आम हो जाये (अजहरी गुफिरलहू)

जब लोग नमाज़ को ज़ाए करने लगें

नमाज़ को ज़ाए करना चन्द तौर से है। नजासत से परहेज़ न करे कपड़े में इस कदर नजासत हो जिस से नमाज फ़ासिद हो जाती है या नापाक जगह में नमाज़ पढ़ने या वुज़ू सहीह तौर पर न हो या नमाज में कोई शर्त या रुक्न अदा न हो या मआज़ल्लाह दिल तहारते बातिनी व नूरे ईमानी से खाली हो इस तरह कि अल्लाह व रसूल जल्ल व अला सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तअ्ज़ीम से ख़ाली हो और जरूरियाते दीन में से किसी अम्रे ज़रूरी दीनी मसलन अल्लाह की पाकी,नबी के इल्मे गैब या ख़ातिमुलअम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़त्मे नुबुव्वत व गैरा का मुन्किर हो अगर्चे जबान से कलिमा पढ़ता हो और यह आख़िरी सूरत बदतरीन हालत है।

जिस में नमाज ही को राइगाँ करना नहीं बल्कि ईमान को भी जाए करना है। आज कल इस के मिस्दाक़ वहाबिया ,दयाबना, कादयानी ,राफ्ज़ी और तमाम मुन्किरीने ज़रूरियाते दीन हैं। उन्हीं के लिये मुख़्बिरे सादिक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने गैब की सच्ची ख़बर दी। سيصلى قوم لا دين لهم. यअ्नी "एक ऐसी कौम नमाज पढ़ेगी जिस का दीन न होगा"।

उन तमाम सूरतों में नमाज़ असलन होती ही नहीं अगर्चे जाहिरी सूरत नमाज़ की देखने में आती है और नमाज को राइगाँ करने की यह सूरत भी है कि अस्लन नमाज़ न पढ़े और नमाज को जाए करना यह भी कि रुकूअ् व सुजूद में तमानियत जो कि वाजिब है,न करे।

इसी तरह वाजिबाते नमाज़ में से कोई वाजिब छोड़ देना,या ख़शूअ् व ख़ुज़ूअ् के बगैर नमाज़ पढ़ना, इन तमाम सूरतों में तज़ीओ सलात लाज़िम आती(नमाज़ को जाए करने का हुक्म) है।

"बुख़ारी शरीफ़" में हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से

JANNATI KAUN?

हदीस मरवी है कि उन्हों ने देखा एक शख़्स को कि रुकूअ व सुजूद कामिल तौर पर नहीं कर रहा था जब उस ने अपनी नमाज़ पूरी की तो हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा तूने नमाज़ नहीं पढ़ी रावी का बयान है मैं गुमान करता हूँ कि हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख़्स से कहा कि अगर तू इस हालत पर मरा तो सुन्नते मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर न मरेगा।

हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

عن حذيفة انه رأى رجلا لايتم ركوعه ولا سجوده فلما قضى صلاته قال له حذيفة ما صليت قال واحسبه قال لومت مت على غير سنة محمد صلى الله عليه و سلم،، (بخاری شریف، جلداول ص ۵۶)

नमाज़ को ज़ाए करना यह भी है कि वक़्त गुज़ार कर पढ़े, उसी "बुख़ारी शरीफ़" में हज़रत ज़हरी रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। वह कहते हैं कि मैं दमिश्क में अनस इब्ने मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वह रोते थे तो मैं ने अर्ज़ की कि आप के रोने का सबब क्या है?उन्होंने कहा मैं नबी अलैहिस्सलाम के ज़माने की कोई चीज़ नहीं पहचान सिवाये इस नमाज़ के और यह नमाज़ भी ज़ाए करदी गई।

हदीस पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

عن عثمان ابن روّاداخی عبد العزیز قال سمعت الزهری یقول دخلت علی انس بن مالک بدمشق و هو یبکی فقلت ما یبکیک فقال لا اعرف شیئا مما ادرکت الا هذه الصلوٰة و هذا الصلوٰة قد ضیعت"
(بخاری شریف، جلداول، ص ۱۷۶)

यह हदीस नमाज़ को उस का वक़्त गुज़ार कर अदा करने के बयान में इमाम बुख़ारी ने ज़िक्र की। नीज़ तबरानी में उन्हीं अनस इब्ने

मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की फ़रमाते हैं फ़रमाया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्ला ने जो नमाज़ें उनके वक़्तों पर पढे और उन का वुज़ू कामिल हो और नमाज़ों में क़याम खुशूअ् व रुकूअ् व सुजूद कामिल तौर पर करे तो उस की नमाज़ सफ़ेद चमकती हुई निकलती है कहती है अल्लाह तेरी हिफ़ाज़त करे जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की और जो ना वक़्त पर नमाज़ पढ़े और वुज़ू कामिल न करे और न खुशूअ् व रुकूअ् व सुजूद तमाम करे तो उस की नमाज़ निकलती है सियाह अँधेरी,कहती है अल्लाह तुझे ज़ाए करे जैसा कि तूने मुझे ज़ाए किया यहाँ तक कि पुराना कपड़ा लपेट दिया जाता है फिर उस नमाज़ी के मुँह पर मारी जाती है।

इसी के हम मअ्ना इज़रत इबादा इब्ने सामित से मरवी है और कअ्ब इब्न अजरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है। फ़रमाया हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जलवा गर हुए और हम सात नफ़र थे। चार हमारे आज़ाद करदा गुलामो में से और तीन हमारे अरबों में से। हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मस्जिद पर अपनी कमर टिकाये थे फ़रमाया तुम लोग किस लिये बैठे हो?हम ने अर्ज़ किया हम बैठे हैं नमाज़ के इन्तिज़ार में तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम थोड़ी देर ठहरे फिर हम पर तवज्जह फ़रमाई तो फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा रब क्या फ़रमाता है? हम ने अर्ज़ किया नहीं फ़रमाया तो जान लो कि तुम्हारा रब फ़रमाता है जो पाँचों नमाज़ें उन के वक़्तों पर पढे और इन नमाज़ों की पाबन्दी करे और उन के आदाब की हिफ़ाज़त करे और नमाज़ों को ज़ाए न करे और नमाज़ों को नाहक़ तसाहुल से ज़ाए न करे तो इस के लिए मेरे ऊपर अहद है कि मैं उस को जन्नत में दाख़िल करूँ और जो उन नमाज़ों को उन के वक़्तों पर न पढ़े और उन के आदाब की हिफ़ाजत न करे और नाहक़ तसाहुल(सुस्ती) से

JANNATI KAUN?

उन्हें जाए कर दे तो उस के लिये मेरे ऊपर कोई अहद नहीं। चाहूँ तो अज़ाब दूँ और चाहूँ तो बख़्श दूँ।

हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

وَعن انس بن مالک قال قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم من صلی الصلوات لوقتها و اسبغ لها وضوءها واتم لها قیامها وخشوعها ورکوعها وسجودها خرجت وهی بیضاء مسفرة تقول حفظک الله کما حفظتنی ومن صلیٰ لغیر وقتها ولم یسبغ لها وضوئها ولم یتم لها خشوعها ولا رکوعها ولا سجودها خرجت وهی سوداء مظلمة تقول ضیعک الله کما ضیعتنی حتیٰ اذا کانت حیث شاء الله لفت کما یلف الثوب الخلق ثم ضرب بها وجهه رواه الطبرانی فی الاوسط وفیه عبادبن کثیر وقد اجمعوا علی ضعفه. قلت ویاتی حدیث عبادة بنحو هذا فی باب من لایتم صلاته و یسیئ رکوعها وعن کعب بن عجرة قال خرج علینا رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم ونحن سبعة نفر اربعة من موالینا وثلاثة من عربنا مسندی ظهورنا الی مسجده فقال ما اجلسکم قلنا جلسنا ننتظر الصلاة قال فأرم قلیلا ثم اقبل علینا فقال هل تدرون ما یقول ربکم قلنا لا قال فان ربکم یقول من صلی الصلوات الخمس لوقتها وحافظ علیها ولم یضیعها استخفافاً لحقها فله علی عهدان ادخله الجنة ومن لم یصلها لوقتها ولم یحافظ علیها و ضیعها استخفافاً بحقها فلا عهد له علی ان شئت عذبته وان شئت غفرت له" (مجمع الزوائد، جلداول، ص۳۰۲)

इस हदीस को रिवायत किया तबरानी ने "औसत" में और

"कबीर" में इमाम अहमद के अल्फाज़ यूँ हैं : रावी ने कहा उस दौरान कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मस्जिद में बैठा था। हम लोग हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मस्जिद की तरफ अपनी कमर टिकाये थे। इतने में हजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हुजरा–ए–मुकद्दसा से बाहर तशरीफ लाये नमाज़े ज़ोहर के वक्त में तो फरमाया तुम लोग इला आखिरिही। इस के बअ्द इमाम अहमद ने मज़कूरा बाला हदीस के हम मअ्ना रिवायत की।

जब अमानत राइगाँ कर दी जाये

यअ्नी अमानत को उस के मुस्तहक तक न पहुँचाया और हदीस में लफ्ज़े अमानत आम है जो माल इल्म, अमल सब को शामिल है।

"तफ़सीरे ख़ाज़िन" में ज़ेरे आयते करीमा :

"اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُکُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰۤی اَھْلِھَا." यअ्नी

JANNATI KAUN?

"बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सुपुर्द करो" (पारा 5/सूरए निसा आयत 58 कन्ज़ुलईमान)

यह आयत तमाम अमानत को शामिल है तो उस के हुक्म में हर वह अमानत दाखिल है जिस की जिम्मा दारी इनसान को सौंपी गई है और यह तीन किस्म पर है:

पहली यह कि अल्लाह की अमानत को मलहूज़ रखे और यह अल्लाह के अहकाम बजालाना और ममनूआत से परहेज़ करना है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद का कौल है कि अमानत हर शय में लाज़िम है यहाँ तक कि वुज़ू और जनाबत से पाकी के लिये गुस्ल नमाज़, ज़कात, रोज़ा, और हर किस्म की इबादत में।

दूसरी किस्म यह है कि बन्दा अपने नफ्स में अल्लाह की अमानत मलहूज़ रखे और वह अल्लाह की वह नेअ्मतें हैं जो अल्लाह ने बन्दे के तमाम अअ्ज़ा में रखी हैं तो ज़बान की अमानत यह है कि

ज़बान को झूट ग़ीबत चुग़ली वग़ैरा ख़िलाफ़े शरअ़ बातों से महफ़ूज़ रखे और आँख की अमानत यह है कि मुहर्रमात पर निगाह से आँख को बचाये और कान की अमानत यह है कि लग्व बे हयाई और झूटी बातें और उस के मिस्ल ख़िलाफ़े शरअ़ बातें सुनने से परहेज़ करे।

तीसरी किस्म यह कि बन्दा अल्लाह के बन्दों के साथ मुआमलात में अमानत का लिहाज़ रखे लिहाज़ा उस पर वदीअत और आरियत का उन लोगों को लौटाना जरूरी है जिन्होंने ने उस के पास यह अमानतें रखीं और उस में उन के साथ ख़ियानत करना मनअ़ है।

हज़रत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस मरवी है कि " रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अमानत उस को पहुँचा जिस ने तेरे पास अमानत रखी और उस के साथ ख़ियानत न कर जिस ने तेरे साथ ख़ियानत की"।

"رواه ابوداؤد و ترمذی فقال حديث حسن غريب"

यअ़नी इमाम तिर्मिज़ी ने कहा यह हदीस हसन ग़रीब है।

इसी में नाप और तोल को पूरा करना दाख़िल है। लिहाज़ा उन में कमी करना हराम है और उस के उमूम में अमीरों और बादशाहों की रईयत(प्रजा)के साथ और उलमा का आम मुसलमानों के साथ ख़ैरख़्वाही दाख़िल है तो यह तमाम चीजें इस अमानत की क़बील से हैं जिस का उन ने मुस्तहक़ीन को पहुँचाने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया।

अल्लामा बग़वी ने अपनी सनद से रिवायत की। फ़रमाते हैं कम ऐसा हुआ कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बा दिया और यह न फ़रमाया हो कि उस का ईमान नहीं। जिस के पास दियानत दारी नहीं। और उस का दीन नहीं जिस को अहद का पास नहीं"।

अल्लामा मौसूफ़ के अल्फ़ाज़ यह हैं

"عن انس قال فلما خطبنا رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم الا قال لا ايمان لمن لا امانة له ولا دين لمن لا عهد له" (تفسیر خازن، جلد اول، ص ۳۲۱)

अकूलु(मैं कहता हूँ) उ़लमा की आ़म मुसलमानों के साथ ख़ैर ख़्वाही यही है कि वह अल्लाह व रसूल(जल्ल व अ़ला स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)के अह़काम उन तक पहुँचायें और अहल को वह इल्म सिखायें जो उन के पास उस की अमानत है उस को छुपालेना अमानत को ज़ाए करना है[1].:

1.अमानत की बर्बादी इस त़रह़ भी होगी कि हर काम नाअहलों के सुपुर्द हो जायें। चुनाँचे ह़ज़रत अबूहुरैरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है वह फ़रमाते हैं :

بينما النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم يحدث اذجاء اعرابى فقال متى الساعة قال اذا ضيعت الامانة فانتظر الساعة قال كيف اضاعتها قال اذا وسد الامر الى غير اهله فانتظر الساعة

यअ़्नी उस दौरान कि नबी करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम गुफ़्तुगू फ़रमा रहे थे एक एअ़्राबी आया और अ़र्ज़ किया कि क़यामत कब आयेगी? ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जब अमानत बर्बाद की जाने लगे तो तुम क़यामत का इन्तिज़ार करो। उस ने सवाल किया अमानत की बर्बादी किस त़रह़ होगी?इरशाद हुआ जब हर काम नाअहलों को सौंपा जाने लगे तो तुम क़यामत का इन्तिजार करो(मिश्कात शरीफ़ स. 469) नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की यह पेशीनगोई भी इस ज़माने में जाहिर होने लगी है चुनाँचे हम आज देख रहे हैं कि हुकूमत व सलतनत ऐसे लोगों के हाथ में है जो किसी त़रह़ भी उस के अहल नहीं। उसी त़रह़ गाँव की सरदारी व प्रधानी नालाइकों के सुपुर्द है ह़द तो यह कि मसाजिद की तोलियत और उन का निजाम व इन्सिराम भी ऐसे ऐसे बे नमाजी और दुनियादार मालदारों व सेठों के हाथ है जो उमूमन ईद व बकरईद की नमाज पढ लेते हैं या कभी कभी जुमआ़की नमाज के लिये मस्जिदों में आजाते हैं यूँही दीनी दर्सगाहों और दीगर कौमी इदारों के अअ़्ला ओहदेदारान (बाकी अगलेसफा पर)

JANNATI KAUN?

इमाम जलालुद्दीन सियूती ने अपनी किताब "अललालीयुलमसनूआ" में अपनी सनद से सरकार से रिवायत किया।

"عن عباس قال قال رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم تناصحوا فى العلم ولا يكتم بعضكم بعضا فان خيانة فى العلم اشد من خيانة فى المال .

यअ्नी "हज़रत अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया : फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने कि इ़ल्म के मुआमले में ख़ैर ख़्वाही से काम लो और कोई किसी से इ़ल्म न छुपाये इस लिये कि इ़ल्म में ख़ियानत माल में ख़ियानत से सख़्त तर है" (जिल्दे अव्वल,स 208)

तक़रीरे बाला (ऊपर लिखे मज़मून)से रौशन हो गया और अदाए फ़र्ज़ियत व अमानत का मअ्ना खूब रौशन हो गया और यह भी मअ्लूम हो गया कि अमानत को जाए करना उन तमाम मज़कूरा सूरतों (ज़िक की हुई सूरतों)को शामिल है यह दहने मुबारक (मुँह मुबारक)से निकले हुए एक कलिमे की जामेइय्यत और उस में कसरते मआनी (ज़्यादा मअ्ना)का यह हाल है कि किसी का बयान इस का इहाता नहीं कर सकता

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूँ तो किसी को जबाँ नहीं।
वह सुख़न है जिस में सुख़न न हो वह बयाँ है जिस का बयाँ नहीं

"इ़ल्म को छुपाना" इस इस से मुराद यह है कि अहल से पोशीदा न रखे जैसा कि तक़रीरे बाला में गुज़रा और ख़ुद आयते मसलन नाज़िमे अअ़ला और सिकेटरी का ओहदा ऐसे लोगों के सुपुर्द किया जारहा है जो इल्मे दीन और कौम के मसाइल व ज़रूरियात से कतई नाबलद हैं।

ज़ाहिर सी बात है अगर अच्छी से अच्छी चीज़ भी ना अहलों के हाथ में पहुँच जाये तो वह बद से बदतर हो ही जायेगी। ग़र्ज़ कि इस ज़माने का हर काम नाअहलों और नालाइकों के सुपुर्द है लेकिन फिर भी ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि कुछ लोग अभी उन ओहदों के लाइक और अहल मौजूद हैं (फ़ारूक़ी ग़ुफ़िरलहू)

करीमा से यह क़ैद सराहतन ज़ाहिर है और बिलाशुबह यह माल में ख़ियानत से ज़्यादा सख़्त है कि बअ़ज़ सूरतों में इल्म के छुपाने से नोबत कुफ़ तक पहुँचती है जैसे हुज़ूर के बड़े मशहूर बहुत फ़ज़ाइल कसीरा को छुपाना और उन के बजाये ऐसी बातें बयान करना जिस से तन्क़ीसे शान रिसालत होती है(नबी की शान में कमी होती है) यह अगले ज़माने में यहूदियों की ख़सलत थी और अब उस के मिस्दाक़ वहाबिया,दियोबन्दी वग़ैरा हुमा हैं।

सरकारे अबद क़रार स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : हर उम्मत में कुछ लोग यहूदी हैं और मेरी उम्मत के यहूदी तक़दीरे इलाही के झुटलाने वाले हैं। (अललालियलमसनूआ)

मफ़हूमे ह़दीस से ख़ूब ज़ाहिर कि कुछ लोगों को सरकार स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने तक्ज़ीब(झुटलाना)और कितमाने ह़क़(ह़क़ को छुपाना)की वजह से यहूदी फ़रमाया तो वहाबिया वग़ैराहुम जो हुज़ूर अ़लैहिस़्सलातु वस़्सलाम के इल्मे ग़ैब ही के मुन्किर हैं और दानिस्ता फ़ज़ाइल छुपाते हैं और ज़रूरियाते दीन को नहीं मानते यह भी बिला शुबह इस ह़दीस के मिस्दाक़ हैं और वह ह़दीस जिस में फ़रमाया कि उस का ईमान नहीं जिस के पास दियानत नहीं उन मुन्किरीन के ह़क़ में अपने ज़ाहिरी मअ़ना पर है तो उन की कलिमा गोई असलन उन्हें मुफ़ीद नहीं।

ज़ियाबुन फ़ी सियाबिन लब पे कलिमा दिल में गुस्ताख़ी
सलाम इस्लामे मुलह़िद को कि तस्लीम ज़बानी है

यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि ह़दीस में क़ुर्बे क़ियामत की निशा–नियों में जो यह फ़रमाया कि कबीरा गुनाहों को ह़लाल ठहरायेंगे ,यह (जुमला)फ़िक़रए साबिक़ा से मरबूत(तअ़ल्लुक़ होना)है और दोनों में अ़लाक़ा सबब व मुसब्ब का है। यअ़नी जब अमानत उन से मसलूब हो जायेगी तो उस का ज़ाए करना यही है कि वह कबीरा गुनाहों में बे परवाही के साथ मुब्तला हो जायेंगे या मआ़ज़ल्लाह उन्हें दिल से

इलाल जान कर ईमान से दूर और दीन से बे ज़ार हो जायेंगे।

हदीस दोनों मअ्ना को शामिल है और दोनों फ़रीक़ हदीस के अलग अलग महमल के एअ्तिबार से हदीस के मिस्दाक़ हैं और दूसरा फ़रीक़ यअ्नी जो महर्रमात क़तईया को हलाल जाने मसलूबुल (छीनलीजायेगी)अमानत ईमान से महरूम इस्लाम से ख़ारिज हैं और अल्लाह की अ़ज़मत के लिहाज़ से हर गुनाह और हर मअ्सियत कबीरा है अगर्चे बअ्ज़ मआ़सी बमुक़ाबिला बअ्ज़ कबीरा हैं और बअ्ज़ सग़ीरा है और कबीरा की जामेअ् तअ्रीफ़(ज़्यादा सहीह तअ्रीफ़)यह है कि वह हर ऐसी मअ्सियत है जिस के मुरतकिब पर किताब व सुन्नत में वईदे शदीद आई और जिस के इरतिकाब से अ़दालत साक़ित हो जाती है। जैसे सूदख़ोरी यतीम का माल खाना, माँ बाप की नाफ़रमानी, क़तअे रहम, जादू, चुग़ली, झूटी गवाही, और हाकिम के पास नाहक़ लोगों की शिकायत करना, ज़िना की दलाली और महारिम के मुआमला में बे ग़ैरती वग़ैरा यूँ ही वह गुनाह जिस के मुरतकिब पर लअ्नत वारिद हुई उसी तरह हर सग़ीरा जिस पर इसरार(बा–बार करना) करे और बार बार उस का मुरतकिब हो।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फ़रमाते हैं

لا كبيرة مع الا ستغفار و لا صغيرة مع الا صرار.

यअ्नी "इस्तिग़फ़ार के साथ कोई गुनाह कबीरा नहीं रहता और इसरार के साथ कोई गुनाह सग़ीरा नहीं रहता" (फ़ैज़ुलक़दीर जिल्द 6 स. 436)

जब सूद ख़ोरी की जाने लगे

यअ़नी कुर्बे क़यामत के आसार में से एक निशानी यह भी है कि सूद ख़ोरी आम तौर पर मुसलमानों में पाई जायेगी। मुसलमान एक दूसरे से सूद का लेन देन करेंगे यअ़नी नाप तोल वाली जिन्स को जैसे गेहूँ, सोना,चाँदी वग़ैरा उसी जिन्स के बदले तफ़ाज़ुल(ज़्यादा लेना) के साथ बेचेंगे ज़्यादा लेने की शर्त पर मुसलमान मुसलमान को उधार देगा[1]

यहाँ से मअ़लूम हुआ कि सूद मुसलमान और मुसलमान, या मुसलमान और ज़िम्मी के दरमियान माले मअ़सूम में होता है और उस पर खुद ह़दीस का पहला फ़िक़्रा कि "नमाज़ को ज़ाए करेंगे" क़रीना है

नीज़ इस ह़दीस में तस़रीह़ फ़रमाई कि मुसलमान और ह़रबी काफ़िर के दरमियान सूद नहीं। लिहाज़ा आज कल कुफ़्फ़ार से ज़्यादा लेना सूद की ह़द में नहीं आता लिहाज़ा उन से बग़ैर बद अ़हदी के जो कुछ जिस त़रीक़े से मिले वह मुसलमान के लिये जाइज़ है।

1.हज़रत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يأتي على الناس زمان لا يبالي المرء ما اخذ منه امن الحلال ام من الحرام. यअ़नी फ़रमाया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि लोग यह ख़याल न करेंगे कि उन्हों ने हलाल हासिल किया या हराम"(मिश्कात शरीफ स. 241)

चुनाँचे आज बअ़ज़ लोग यह कहते नज़र आते हैं कि "आज कल तो हलाल मिलता ही नहीं "चूँकि हलाल में फ़ुज़ूल ख़र्ची और ऐश व मस्ती की गुन्जाइश नहीं रहती। इस लिये लोग यह तावील कर लेते हैं। कि आज कल तो हलाल मिलता ही नहीं"

हालाँकि हदीसे पाक में उस की सख़्त वईद वारिद है चुनाँचे फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने : (बाक़ी अगले सफ़ा पर)

لا يدخل الجنة لحم نبت من السحت و كل لحم نبت من السحت كانت النار اولى به. (बाक़ी अगले सफ़े पर)

जब रिश्वत का लेन देन आ़म होने लगे

फिर सर कार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने कु़र्बे कयामत की एक और निशानी यह बताई कि रिश्वत का लेन देन लोगों में आ़म होगा गोया उन के नज़्दीक वह मअ़्मूली बात हो हालाँकि अल्लाह व रसूल (जल्ल व अ़ला व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम)के नज़्दीक मअ़्मूली बात नहीं बल्कि सख़्त ह़राम है(1)

यअ़्नी "जन्नत में वह गोश्त नहीं जायेगा जो माले हराम से बना और जो गोश्त हराम से बना हो दोजख उस की ज्यादा मुस्तहक है,,"(मिश्कात शरीफ स 242)

अगर लोग तक़्वा शिआ़री के ज़रीआ रिज़्के हलाल कमाने की फिक्र करें तो जो मुश्किलात कसबे हलाल में पेश आ रही हैं हर्गिज़ न आयें मगर हमारा ह़ाल तो यह है कि जो भी हो जैसे भी हो ह़लाल हो,हराम हो बस हज़म करते जाओ (फारूकी गुफ़िरलहू)

1.रिश्वत खोरी इस कद्र आम हो चुकी है कि अपने को मज़हबी और कौमी हमदर्द कहलाने वाले भी रिश्वत को हदिया का नाम देकर हलाल समझने लगे हैं हालाँकि फुक़हा–ए–किराम ने साफ तस्रीह फरमादी है कि जो शख़्स किसी को उस के ओहदे पर फाइज होने से पहले रिश्ता दारी वगै़रा में कुछ लिया दिया करता था तो उस का लेना जाइज है और ओहदा पर फाइज होने के बअ़्द लोग जो भी देते हैं सब रिश्वत है।

मिश्कात शरीफ में है استعمل النبی صلی اللہ علیہ وسلم رجلا من الازد یقال لہ ابن اللتبیۃ علی الصدقۃ فلما قدم قال ھذا لکم وھذا ھدی لی فخطب النبی صلی اللہ علیہ وسلم فحمد اللہ واثنی علیہ ثم قال اما بعد! فانی استعمل رجالا منکم علی امور مما ولا نی اللہ فیأتی احدھم فیقول ھذالکم وھذہ ھدیۃ اھدیت لی فھلا جلس فی بیت ابیہ اوبیت امہ فینظر ا یھدی لہ ام لا .

यअ़्नी "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कबीला अज़्द के इब्ने लुतबिया नामी एक शख़्स को जकात वुसूल करने को भेजा जब वह ज़कात (बाकी अगले सफे पर)

कुर्आन शरीफ़ में उस की हुरमत मुसर्रह(जाहिर तौर बयान की गई) है और हदीस में फ़रमाया।

لعن الله الراشی و المُرتشی. यअ़नी "अल्लाह की लअ़नत है रिश्वत लेने और देने वाले पर"(मुसनदे इमाम अहमद जिल्द 2 स 387)

यअ़नी " रिश्वत लेने वाला मुतलक़न मुस्तहक़े लअ़नत है और देने वाला भी उसी रस्सी में गिरफ़्तार है जब कि नाजाइज़ काम के लिए रिश्वत दे या बग़ैर मजबूरी के दे और दफ़ए जुल्म(जुल्म से बचने) और जाइज़ हक़ की तहसील(हक़ हासिल करने के लिए) के लिए जब रिश्वत दिये बग़ैर चारा न हो तो यह सूरत मुस्तसना है और देने वाला इस वईद का मिस्दाक़ नहीं।

वुसूल कर के लाया तो अर्ज़ किया कि यह बैतुलमाल का है और यह मुझे हदिया दिया गया है यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खुत्बा दिया और हम्द व सना के बअ़द इरशाद फ़रमाया : मैं तुम में से बअ़ज़ लोगों को उन कामों पर मुकर्रर करता हूँ जिन का अल्लाह ने मुझे मुतवल्ली बनाया है तो उन में से एक आकर कहता है कि यह तुम्हारा है और यह मुझे हदिया दिया गया है तो वह अपने बाप के या माँ के घर क्यों न बैठ गया फिर देखता कि उसे हदया मिलता है या नहीं"। स 156

इस हदीसे पाक से वाज़ेह हुआ कि जो चीज ओहदे की वजह से मिले वह रिश्वत है (फ़ारुक़ी ग़ुफ़िरलहू)

JANNATI KAUN?

जब कुर्आन को गाना ठहरा लिया जाये

यअ़नी तजवीद के क़वाइद का लिहाज़ नहीं रखेंगे और क़िरात का जो तरीक़ा सरकार स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ज़माने से मुतवारिस(चला आ रहा है) है उस की पैरवी न करेंग यअ़नी गाने के तौर पर उतार चढ़ाओ के साथ कुर्आन पढ़ेंगे या साज़ के साथ कुर्आन की तिलावत करेंगे।

बल्कि " इतक़ान फ़ी उ़लूमिलकुर्आन लिल इमाम जलालुद्दीन सियूती" में है कि लोगों ने तिलावते कुर्आन में गानों की आवाज़ें ईजाद कर लीं हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों के बारे में फ़रमाया कि उन के दिल फ़ितनों में हैं और जिन्हें उन का हाल पसन्द हो उन के दिल भी फ़ितने में हैं"।

जो त़र्ज़ उन्हों ने ईजाद किए उन में से एक का नाम 'तरईद' रखा और वह यह है कि क़ारी काँपती हुई आवाज़ बनाये गोया वह ठन्डक से या तकलीफ़ से काँप रहा है और दूसरी त़र्ज़ का नाम "तरक़ीस" रखा और वह यह है कि हर्फ़ साकिन पर सुकूत (ख़ामोशी)का इरादा करे फिर वहाँ से हरकत के साथ चल पड़े गोया वह दौड़ लगा रहा है या तेज़रफ़तारी में है।

एक तर्ज़ और निकाला है जिस का नाम "तत़रीब" रखा और वह यह है कि कुर्आन करीम को तरन्नुम से और लहन से पढ़े उस तौर पर कि जहाँ मद नहीं किया जाता वहाँ मद करे और मद में बे जा ख़िलाफ़े क़ाइदा ज़्यादती करे और एक त़र्ज़ का नाम "तहज़ीन" है और वह यह कि कुर्आन करीम ग़मगीन अन्दाज़ में पढ़े जैसे ख़शूअ़ व ख़ज़ूअ़ के साथ रो देता हो।

इमाम सियूती के अल्फ़ाज़ यूँ हैं :

قد ابتدع الناس قرائة القرآن اصوات الغناء (الى ان قال) و قد قال فى هٰؤلاء مفتونة قلوبهم و قلوب من يعجبهم شأنهم و مما ابتدعوه شئ

سموه الترعيد وهوأن يرعدصوته كانه يرعد من برداً و ألم و آخر سموه الترقيص وهو أن يروم السكوت على الساكن ثم ينفر من الحركة كانه فى عدو أو هرولة و آخر يسمى التطريب وهو أن يترنم بالقرآن ويتغنم به فيمد غير مواضع المدويزيد فى المد على مالا ينبغى و آخر يسمى التحزين وهو أن يأتى على وجه حزين يكاديبكى مع خشوع و خضوع . (اتقان جز ثانى ص ۱۰۱)

अक़ूलु(अ़ल्लामा अज़हरी फ़रमाते हैं)उस में कोई ह़रज न होना चाहिए जब कि तजवीद के साथ पढ़े और क़वाइदे क़िरात(क़िरात के नियमों)का लिहाज़ रखे, दिखावा उक़सूद न हो, बल्कि बे साख़्ता रिक़्क़त त़ारी(रोने जैसी ह़ालत) हो जाये इस लिये कि उ़लमा ने तस़्रीह़ फ़रमाई उन में इमाम जलालुद्दीन सियूत़ी भी हैं जो उसी ''इत्क़ान''में फ़रमाते हैं कि क़िराते क़ुर्आन(क़ुर्आन पढ़ने)के वक़्त रोना मुस्तह़ब है और जो रोने पर क़ादिर न हो वह रोनी सूरत बनाये और ह़ुज़्न व ख़ुशुअ़ तिलावत के वक़्त मत़्लूब व मह़बूब(बेहतर) है।

JANNATI KAUN?

قال الله تعالىٰ:

''وَيَخِرُّوْنَ لِلأَذْقَانِ يَبْكُوْنَ .

यअ़नी ''और ठोडी के बल गिरते हैं रोते हुये''

(पारा न. 15/सूरए असरा, आयत 109)

और सह़ीह़ैन में वह ह़दीस है जिस में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द का नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के लिये क़ुर्आन पढ़ना मज़कूर है इस में है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने देखा कि नागाह ह़ुज़ूर की आँखों से अश्क रवाँ थे।

और बैहक़ी ''शोअ़बुलईमान''में सअ़्द इब्ने मालिक से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि बेशक क़ुर्आन ह़ुज़्न व बे चैनी की ह़ालत उतरा है तो जब तुम उस को पढ़ो तो रोओ फिर अगर तुम्हें रोना न आये तो रोनी सूरत बनाओ और उसी में अ़ब्दुलमालिक इब्ने उ़मैर की मुरसल

अहादीस में से एक हदीस है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "तुम पर एक सूरत तिलावत करता हूँ तो जो रोये उस के लिये जन्नत है फिर अगर तुम्हें रोना न आये तो रोते बनो"(रोने जैसी सूरत बनालो)।

और मुस्नदे अबू यअ्ला में है कि:"कुर्आन को हुज़्न के साथ पढो इस लिये कि वह हुज़्न के साथ उतरा" और त़बरानी में है कि "लोगो में सब से अच्छा क़ारी वह है जो क़ुर्आन पढे तो गमगीन हो"।

और "शरहुल मुहज़्ज़ब"में फरमाया कि: तह़सीले गिरया(रोने की हालत हासिल करने) का त़रीका यह है कि जो पढ़ रहा है उस में तहदीद व वईद शदीद और जो अहद व पैमान(डर और गुनाह पर सख़्त अज़ाब का बयान) हैं उन में गौर करे फिर अपनी कोताही याद करे अब भी अगर रोना न आये और गमगीन न हो तो उस बात के न मिलने पर रोये इस लिये कि यह मसाइब में से है।

अल्लामा सियूती क़ुद्दिस सिर्रहुलक़वी के अल्फाज़ यह हैं।

يستحب البكاء عند قراءة القرآن و التبالى لمن لا يقدر عليه و الحزن و الخشوع قال تعالىٰ و يحزون للأ ذقان يبكون و فى الصحيح حديث قراءة ابن مسعود على النبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم و فيه فاذا عيناه تذرفان وفى لشعب للبيهقى عن سعد ابن مالك مرفوعاً أن هٰذا القرآن نزل يحزن و كآبة فاذاقرأ تموه بكوا فان لم تبكوا فتباكوا و فيه من مرسل عبد الملك بن عمير أن رسول الله صلى الله تعالىٰ عليه وسلم قال أنى فارئ عليكم سورة فمن بكى فله الجنة فان لم تبكوا فتبا كوا،و فى مسند أبى يعلىٰ حدث أقرُوالقرآن بالحزن فانه نزل بالحزن و عند الطبزانى أحسن الناس قراءة من اذا قرأ القرآن يتحزن قال فى شرح المهذب و طريقه فى

تحصيل البكاء أن يتأمل ما يقرأ من التهديد و عيد الشديد و المواثيق و العهود ثم يتفكر فى تقصيره فيها فان لم يحضره عند ذلك حزن و بكاء فليبك على فقد ذلك فانه من المصائب (اتقان جزءثانی ۱۰۷)

अल्लामा जलालुद्दीन सियूती फ़रमाते है कि उसी(मज़कूरा तरज़ों)के कबील से एक बिदअत यह है कि बहुत से लोग इकट्ठे हो ब–एक आवाज़ पढ़ते हैं "أفلا تعقلون"को أفل تعقلون पढ़ते हैं और "قالوا آمنا" वाओ के हज़फ़ के साथ (बिगैर वाव के)قال آمنا पढ़ते हैं जहाँ मद नहीं वहाँ मद करते हैं ताकि जो उन्होंने अपनाया उन का तरीका बन जाये और मुनासिब यह है उस का नाम तहरीफ़ रखा जाये।

हज़रत इमाम जलालुद्दीन सियूती अलैहिर्रहमा के अल्फ़ाज़ यह हैं

و من ذلك نوع أحدثه هؤلاء الذين يجتمعون فيقرؤن كلهم بصوت واحد فيقولون فى قوله تعالىٰ "أفلا تعقلون" أفل تعقلون" بحذف الا لف "قال آمنا" بحذف الواو يمدون مالا يمد ليستقيم لهم الطريق التى سلكوها و ينبغى أن يسمى التحريف انتهى. (اتقان، جزءثانی، ص۱۰۲)

अकूलु(अल्लामा अज़हरी फ़रमाते हैं) बे शक तहरीफ़ है और क़स्दन उस तौर पर पढ़ने वाला मुस्तहक़े तहरीफ़ क़रार पायेगा।

यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि मुजर्रद तहसीनी सौत और खुश इलहानी जब कि ज़्यादती व नुक़सान हुरूफ़ और मद मुफ़रत और तमतीत (बेजा खीचतान) (अच्छी आवाज़ और अच्छी तर्ज़ जब कि हर्फ़ की कमी और ज़्यादती और बेजा खींच तान न हो तो हरज नहीं)से पाक हो और क़वाइदे क़ुर्आन की रिआयत की जाये तो उस में हरज नहीं बल्कि यह मसनून है।

हदीस इब्ने हब्बान वग़ैरा में है :

"زينوا القرآن باصواتكم و فى لفظ عند الدار مى حسنوا

القرآن باصواتكم فان الصوت الحسن يزيد القرآن حسنا وأخرج البزار و غيره حديث حسن الصوت زينة القرآن و فيه احاديث صحيحة كثيرة فان لم يكن حسن الصوت حسنه ما استطاع بحيث لا يخرج الى حد التمطيط .

यअ़नी "कुर्आन को अपनी आवाज़ों से मुज़ैयन करो और दारमी की एक रिवायत में है कुर्आन को अपनी आवाज़ों से सँवारों इस लिये कि अच्छी आवाज़ कुर्आन के हुस्न को बढ़ाती है और बज़ार वग़ैरा ने हदीस रिवायत की कि : अच्छी आवाज़ कुर्आन की ज़ीनत है और अगर क़ारी खुश आवाज़ न हो तो जहाँ तक हो सके अच्छी आवाज़ बनाये पिरोने की कोशिश में "तमतीत" की हद तक न पहुँचे (इतक़ान जुज़ सानी स. 107)

यहाँ से मअ़लूम हुआ कि "तमतीत" जो नाजाइज़ है वह यह है कि मद में बहुत मुबालग़ा करे और हरकात के अश्बाअ़ में मुबालग़ा करे यहाँ तक कि ज़बर से "अलिफ़" पेश से "वाओ" ज़ेर से "या" नुमाया हो जाये या जहाँ इदग़ाम का महल नहीं वहाँ इदग़ाम करे (एक हर्फ़ को दूसरे में मिलाने की जगह नहीं वहाँ मिलाकर पढ़ना मद को मद की मिक़दार से ज़्यादा खींच कर पढ़ना ज़बर वाले हर्फ़ को इस तरह पढ़े कि अ़लिफ़ हो जाये पेश को इस तरह कि वाओ और ज़ेर को इस तरह कि य हो जाये यह सब तमतीत है जो नाजाइज़ है)।

नीज़ हदीस में है सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"اقرؤا القرآن بلحون العرب و أصواتها و ايا كم و لحون اهل الكتابين و أهل الفسق فانه سيجئ أقوام يرجّعون بالقرآن ترجيع الغناء والرهبانية〈 و في نسخة و النوح 〉لا يجاوز حناجرهم مفتونة قلوبهم و قلوب من يعجبهم

شانهم أخرجه الطبرانی والبيهقی ١

यअ़्नी कुर्आन को अ़रबों के त़र्ज़ और उन की आवाज़ के साथ पढ़ो और यहूद व नसारा के त़र्ज़ से अपने आप को दूर रखो और अह्ले फ़िस्क़[(2)]के त़र्ज़ से बचो इस लिये कि कुछ ऐसे आयेंगे जो कुर्आन में गाने की त़रह़ ''तरजीअ़'' (उतार चढ़ाव)से काम लेंगे और अह्ले रहबानियत के तौर पर पढ़ेंगे कुर्आन उन के गलों से नीचे न उतरेगा उन के दिल फ़ितनों में पड़े हैं और उन के दिल भी जिन्हें उन का यह ह़ाल भला लगता हो इस ह़दीस को त़बरानी और बैहक़ी ने रिवायत किया (इत्क़ान जुज़ सानी स. 107)

---

1. इस ह़दीस पाक को स़ाह़िबे मिश्कात ने स. 191/पर और स़ाह़िब ''तैसीर''नेजिल्द/2 स. 194 पर ह़ज़रत अबू हुज़ैफ़ा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से इन अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत किया :

قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم اقرؤا القرآن بلحون العرب و اصواتها و اياكم ولحون اهل العشق ولحون اهل الكتابين و سيجئ بعدى قوم يرجعون بالقرأن ترجيع الغناء و الرّهبانية و النوح لا يجاوز حناجز هم مفتونة قلوبهم و قلوب الذين يعجبهم شانهم

यअ़्नी ''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कुर्आन मजीद अरब के लहनों में पढ़ो और यहूद व नसारा अह्ले इश्क़ के लहनों से बचो कि अन्क़रीब मेरे बअ़्द कुछ ऐसे लोग आने वाले हैं जो कुर्आन आ, आ, कर के जैसे गानेकी तानें और राहिबों और मरसिया ख़्वानों की उतार चढ़ाओ कुर्आन उन के गलों से नीचे न उतरेगा (यअ़्नी उन के दिलो पर कुछ अस़र न करेगा) फ़ितने होंगे उन के दिल और जिन्हें उन की यह हरकत(यअ़्नी इस तरह की उतार चढाव वाली किरात)पसन्द आयेगी उन के दिल भी (2)आज यह बात इस के हाफ़िज़ों क़ारियों में आम तौर से देखी जाती है। कि ख़ुश इलहानी और उतार चढाओ का बड़ा ख़याल करते हैं अगर्चे साल के ग्यारह महीने नमाज के क़रीब तक न गये दाढ़ी मुन्डवाई, हराम का इरतिकाब किया और रमजान आते (बाक़ी अगले सफ़ा पर)

तिलावत में एक मज़मूम त़रीक़ा यह भी है कि औरतों की आवाज़ बना कर तिलावत करे यह खुद नाजाइज़ है तशब्बोह की वजह से और गाने की त़र्ज़ पर होने की वजह से। उ़लमा फ़रमाते हैं कि तफ़ख़ीम के साथ पढ़ना मत़लूब है इस लिये ह़ाकिम की ह़दीस में है :

نزل القرآن بالتفخيم قال الحليمي و معناه أنه يقرأ على قرأة الرجال و لا يخضع الصوت فيه ككلام النساء.

यअ़नी कुर्आन तफ़ख़ीम के साथ उतरा ह़लीमी ने फ़रमाया तफ़ख़ीम का मअ़ना यह है कि कुर्आन को मर्दों की तिलावत के त़र्ज़ पर पढ़े और उस में औरतों की बोली की त़रह़ आवाज़ पस्त न करे।

ही मुसल्ला पर खड़े कुर्आन सुनाने लगे ह़द तो यह है कि अ़वाम भी स़ही पढ़ने वाले कारियों को छोड़ कर गाने जैसी क़िरात और औरत जैसी आवाज़ वाले पढ़ने वालों को पसन्द करते हैं भले ही वह मख़ारिज की स़हीह़ अदायेगी और तजवीद(क़िरात के फ़ायदे)से ना बलद (अन्जान) हों (फ़ारूक़ी गुफ़िरलहू)

JANNATI KAUN?

(इत्क़ान,जुज़ सानी स 107 / 108)

जब औलाद दिल की घुठन हो जायें

इस से मुराद औलाद में [1] नाफ़रमानी. की कसरत है माँ बाप की नाफ़रमानी अल्लाह जब्बार व क़हहार की नाफ़रमानी है और उन की नाराज़गी अल्लाह क़हहार की नाराज़गी है। आदमी माँ बाप को राज़ी कर ले तो वह उस के लिये जन्नत हैं और अगर नाराज़ कर दे तो वही उस के लिये बाइसे दोज़ख़ हैं।

जब तक माँ बाप को राजी न करेगा ,उस का कोई फ़र्ज़ कोई नफ़्ल,कोई अ़मले नेक अस़लन क़बूल न होगा। अज़ाबे आख़िरत के अ़लावा दुनिया में ही जीते जी उस पर सख़्त बला नाज़िल होगी। मरते वक़्त मआ़ज़ल्लाह कलिमा नसीब न होने का ख़ौफ़ है।

ह़ज़रत अबूहुरैरा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि फ़रमाया रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने :

"طاعة الله طاعة الوالد و معصية الله معصية الوالد"

"अल्लाह की इताअ़त वालिद की इताअ़त है और अल्लाह की मअ़सियत

1.आज वालिदैन के साथ नाफरमानी का मुआमला भी आसानी से मुशहिदा किया जसकता है जबकि वालिदैन की नाफरमानी तो दर किनार कुर्आन अज़ीम ने उन से ऊँची आवाज में बात करने बल्कि उफ या हूँ तक कहने की सख़्त मुमानअ़त फरमाई है चुनाँचे इरशादे बारी तआला है :

وَلَا تَقُلْ لَّهُمَا اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُما وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا .

यअ़नी "तू उन से हूँ न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से तअ़ज़ीम की बात कहना "(पारा न. 15/सूरए असरा/आयत न. 23 कनज़ुलईमान)

लेकिन आज मुआमला बिलकुल उस के बर अक्स है हम ने ऐसे बेटों को भी देखा है जो बुढापे में अपने वालिदैन की खिदमत व इताअ़त करने की बजाये उन्हें तरह तरह की अज़ियतें देते हैं बीमार माँ बाप दवा वगैरा तक के लिये मोहताज हैं। कोई पुरसाने हाल नहीं हत्ता कि अपनी बीवी की खुश्नूदी के लिये उन्हें मारपीट कर घरों से भी निकाल देते हैं जो उन की दुनिया व आखिरत की बर्बादी का सबब है। चुनाँचे खुद उसी हदीस में उसे कयामत की निशानियों में शुमार फ़रमाया कि मर्द अपनी बीवी की इताअ़त करे और माँ की नाफरमानी करे और बाप को दूर रखे (फारुकी गुफिरलहू)

वालिद की (नाफ़रमानी)मअ़सियत है (मजमउज़्ज़वाइद जि. 8 स. 136)

नीज़ फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने:

”كل الذنوب يؤخر الله ما شاء منها الى يوم القيامة الا عقوق الوالدين فان الله تعالىٰ يعجله لصاحبه فى الحياة قبل الممات.

यअ़नी "सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआला चाहे तो क़यामत के लिये उठा रखता है मगर माँ बाप की नाफ़रमानी की सज़ा उस के जीते जी(दुनिया ही में)पहुँचाता है''(हाकिम मुस्तदरक जि. 4 स. 156)

नीज फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने :

”مَلْعُوْنٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ ، مَلْعُوْنٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيهِ،مَلْعُوْنٌ مَنْ عَقَّ وَالِدَيْهِ.

यअ़नी "मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये मलऊन है वह जो अपने वालिदैन को सताये''(तरग़ीब,जि. 3 स. 287)

JANNATI KAUN?

इमाम अहले सुन्नत अअ़्ला हज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ कादरी बरेलवी कुद्दिस सिर्रुहुल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

वालिदैन के साथ नेकी सिर्फ़ यहीं नहीं कि उन के हुक्म की पाबन्दी की जाये और उन की मुख़ालफ़त न की जाये बल्कि उन के साथ नेकी यह भी है कि कोई ऐसा काम न करे जो उन को नापसन्द हो अगर्चे उस के लिये ख़ास़ तौर पर उन का कोई हुक्म न हो। इस लिये कि उन की फरमाँबरदारी और उन को खुश रखना दोनों वाजिब हैं। और नाफरमानी और नाराज करना हराम है''(हुक़ूक़े वालिदैन स 38)

वालिदैन उस के लिये अल्लाह जल्ल शानुहू और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साये और उन की रबूबियत व रहमत के मज़हर हैं यही वजह है कि कुर्आन अज़ीम में अल्लाह जल्ल जलालुहू ने अपने हक के साथ उन का हक़ भी जिक्र फरमाया:

हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का. اَنِ اشْكُرْلِیْ وَالِدَیْکَ

(पारा न.21 / सूरए लुकमान,आयत 14 कन्जुलईमान)

हदीसे पाक में है कि : एक सहाबी–ए–रसूल ने हाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह एक राह में ऐसे गर्म पत्थरों पर कि अगर गोश्त उन पर डाला जाता कबाब होजाता मैं छः मील तक अपनी माँ को अपनी गर्दन पर सवार कर के ले गया हूँ क्या मैं अब उस के हक़ से ओहदा बरआ(क्या मैंने हक़ अदा कर दिया) हो गया ? इरशाद हुआ :

यअ़नी "तेरे पैदा होनेमें जिस क़दर दर्द : لعله ان یکون بطلقة واحدة. के झटके उस ने उठाये हैं शायद उन में से एक झटके का बदला हो सके.(मजमउ़ज़्ज़वाइद जि. 8 स. 137)

बिलजुमला वालिदैन का हक़ वह नहीं कि इनसान उस से ओहदा बरा हो(उनके हुक़ूक़ से छुटकारा पा सके) सके वह उस की हयात व वुजूद के सबब हैं तो जो कुछ नेअ़मतें दीनी व दुनियावी पायेगा सब उन्हीं के तुफ़ैल में कि हर नेअ़मत व कमाल वुजूद पर मौक़ूफ़ है और वुजूद के सबब वह हुये तो सिर्फ़ माँ बाप होना ही ऐसे अ़ज़ीम हक़ का मूजिब है जिस से कभी बरियुज़्ज़िम्मा(छुटकारा पाना) नहीं हो सकता न कि उस के साथ उस की परवरिश में कोशिश उस के आराम के लिये उन की तकलीफें खुसूसन पेट में रखने, पैदा करने, दूध पिलाने, में माँ की अज़ियतें उन का शुक्र कहाँ तक अदा हो सकता है?

JANNATI KAUN?

जब उ़लमा अहले सरवत के लिये सीनों पर हाथ बाँधे झुकें

इस से मुराद उलमा के गिरोह में वह फुरसाक़ हैं जो माल व जाह के लालच में अहले सरवत के लिये झुकेंगे जिस का नतीजा यह होगा कि हलाल को हराम और हराम को हलाल ठहरायेंगे और दुनिया दारों को उन की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ फ़तवा देंगे जैसा कि आगे उसी हदीस में बयान हुआ उस से मक़सूद[1] उलमा और अवाम दोनों की तहजीर व तम्बीह(डराना और नसीहत देना)है।

इमाम जलालुद्दीन सियूती हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक से

1.रुश्द व हिदायत की राह से भटकने वाले उलमा सू (बुरे उलमा) ही उमूमन सर माया दारों के पास जाते हैं और चन्द टकों की खातिर अपना फजल व वकार उन के पास गिरवीं रख देते हैं।चुनाँचे फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने

ان اناسا من امتی سیتفقهون فی الدین ویقرؤن القرآن ویقولون فاتی الا مراء فنصیب من دینا هم و نعتزلهم بدیننا ولا یکون ذلک کما لا یجتنی من القتاد الا الشرک کذلک لا یجتنی من قربهم .

यअ़नी "मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग होंगे जो दीन की समझ हासिल करेंगे और क़ुर्आन पढ़ेंगे फिर सरमाया दारों के पास जायेंगे और कहेंगे कि हम सरमाया दारों के पास जाते हैं और उन से दुनिया हासिल करते हैं और अपना दीन बचा कर अलग हो जाते हैं हालाँकि ऐसा हो ही नहीं सकता जिस तरह क़ताद(एक काँटे दार दरख़्त) से काँटों के सिवा कुछ नहीं मिल सकता उसी तरह सरमाया दारों के क़रीब रहने से कुछ नहीं हासिल हो सकता "(सुनन इब्ने माजा स 23)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

لوان اهل العلم صانوا العلم و وضعوه عند اهله لساد وابه اهل زمانهم ولکنهم بذلوه لا هل الدنیا لینا لو ابه من دنیاهم فها نوا علیهم .

यअ़नी "अगर उलमा अपना इल्म महफ़ूज़ रखते और उसे जी सलाहियत इनसानों पर खर्च करते तो ज़माना के सरदार बन जाते मगर उन्होंने दुनिया के हुसूल के लिये अपना इल्म अहले दुनिया पर खर्च किया जिस की वजह से अहले ज़माना की नज़रों में ज़लील व ख़्वार हो गये. (मिश्कात शरीफ़ स. 37)(बाक़ी अगले सफ़ा पर)

अपनी किताब "अललालियुलमसनूआ" में हदीस रिवायत करते हैं जिस को उन्होंने अबू मुअिन से रिवायत किया। उन्हों ने कहा मुझ से हदीस बयान की सुहैल इब्ने हस्सान कलबी ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक वह चिकनी फिसलनी चट्टान जिस पर उलमा के पैर नहीं जमते "तमअ" है(लालच)। हदीस के अल्फाज़ यह हैं।

"عن ابی معن عن اسامة بن زید مرفوعاً ان الصفا الزلال لا هل العلم الطمع لاَصع : محمد بن مسلمة ضعیف جداو کذا خارجة (قلت) اخرجه ابن المبارک فی الزهد عن ابی معن قال حدثنی سهیل بن حسان الکلبی ان رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم قال ان الصفا الزلال الذی لا یثبت علیه اقدام العلماء الطمع و الله اعلم" (اللآلی المصنوعۃ، جلداول ص،۲۱۰)

उसी में हज़रत अनस से मरफूअन मरवी है कि उलमा अल्लाह के रसूलों के बन्दों के पास अमीन हैं जब तक बादशाह से न मिलें और दुनिया में दख़ल न दें तो जब दुनिया में दख़्ल देने लगें और बादशाहों से मिल जायें तो बेशक उन्हों ने रसूलों के साथ ख़यानत की तो उन से दूर रहो। हदीस के अल्फाज़ यह हैं।

आज यह मन्ज़र भी हमारी निगाहों के सामने है कि उलमा ने आख़िरत से बे फिक्र हो कर इस फ़ानी दुनिया का हुसूल ही अपने इल्म का मक़सद बना रखा है और सियासी लीडर बनने और शोहरत व दौलत हासिल करने में सर गरदाँ हैं बअ्ज नाआक़ेबत अन्देश नाम निहाद उलमा अख़बारात में छपना अपनी मेअ्राज तसव्वुर करते हैं और तरह तरह के लायअ्नी और गुमराह कुन बयानात दे कर कौम और जिम्मादाराने कौम को बदनाम करते हैं (फारूकी गुफिरलहु)सियासी लीडर बनने की

"عن انس مرفوعا العلماء امناء الرسل على العباد مالم يخالطوا لسلطان و يدخلوا فى الدنيا فاذا دخلوا فى الدنيا و خالطوا السلطان فقد خانوا الرسول فاعتزلوهم'

(اللآلی المصنوعۃ، جلداول ص،۲۱۹)

मगर सारे उ़लमा का यह ह़ाल न होगा "बुख़ारी शरीफ़"की ह़दीस में वारिद हुआ जो ह़ज़रत अमीर मुआ़विया से मरवी है कि सर कार अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उस को फ़क़ीह (दीन की समझ रखने वाला)बनाता है और मैं तो बाँटने वाला हूँ अल्लाह देता है! मेरी उम्मत का एक गिरोह अल्लाह का हुक्म आने तक अल्लाह के दीन पर क़ाइम रहेगा उन के मुख़ालिफ़ उन्हें कुछ न नुक़सान पहुँचा सकेंगे।

ह़दीस पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

"عن ابن شهاب قال قال حميد بن عبد الرحمن سمعت معاوية خطيبا يقول سمعت النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم يقول من يرد الله به خيرا يفقهه فى الدين و انما انا قاسم والله يعطى ولن تزال هذه الا مة قائمة على امر الله لا يضرهم من خالفهم حتى يأتى امر الله" (بخاری شریف جلد،۱،ص۱۶)

इस ह़दीस से ज़ाहिर होता है कि क़यामत तक ख़यारे उ़लमा(अच्छे उ़लमा) जो शरीअ़त के पासबान और दीन के फ़क़ीह़ हैं होते रहेंगे वह ख़ुद दीन पर क़ाइम रहेंगे और उन की बरकत से उन के सच्चे मुत्तबईन कि अहले सुन्नत व जमाअ़त हैं दीन पर क़ाइम रहेंगे।

इस पर ख़ुद इसी ह़दीस में क़रीना मौजूद कि फ़रमाया क़ुर्रा ब–कसरत होंगे और फ़ुक़्हा कम रह जायेंगे जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि ऐसे लोग क़यामत आने तक आते रहेंगे और यह जो फ़रमाया कि क़ारी ब–कसरत होंगे फ़िक़रा–ए–साबिक़ा(पिछले जुमले)से मिलाने पर यह समझ में आता है कि क़ारियों की कसरत से ऐसे लोग मुराद हैं जो क़ुर्आन तो पढ़ेंगे लेकिन उस के मअ़ना में फ़हम व तदब्बुर(सूझ

बूझ) से काम न लेंगे और उस तरह सहाबा किराम का वह तरीक़ा जो हुजूर अलैहिस्सलात वस्सलाम से उन्होंने लिया और उन के मुत्तबेईन में (अनुयाईयों) राइज हुआ मतरूक हो जायेगा।

हज़रत अबू अब्दुरहमान सुलमी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है उन्होंने फ़रमाया हम से हदीस बयान की उन सहाबी ने जो हम को कुर्आन पढ़ाते थे कि वह लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से दस आयतें सीखते थे तो दूसरी दस आयतों की क़िरात न शुरूअ् करते जब तक कि जो उन में इल्म व अमल है जान नहीं लेते। उन्हों ने फ़रमाया तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हम को इल्म व अमल दोनों की तअ्लीम देते थे।

इस हदीसे पाक से साबित हुआ कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को काइनात के तमाम वाक़िआत की ख़बर है,माज़ी व मुस्तक़बिल(भूतकाल व भविष्यकाल) सब का इल्म है आलम का ज़र्रा ज़र्रा पेशे नज़र है क़र्बे क़यामत की निशानियाँ और ख़ुद क़यामत सब मुशाहिदा में हैं।

JANNATI KAUN?

उलमा फ़रमाते हैं कि सर कार अलैहिस्सलातु वस्सलाम दुनिया से तशरीफ़ न ले गये मगर इस हाल में कि अल्लाह ने हुजूर को उस से मुत्तलअ् फ़रमादिया कि क़यामत कब आयेगी उस की तअ्ईन(वक़्त ख़ास करना)लोगों से पोशीदा रखने का सर कार अलैहिस्सलातु वस्सलाम को हुक्म दिया बल्कि बअ्ज़ अहादीस से क़यामत के अहवाल का भी पेशे नज़र होना साबित है।

उलमा–ए–किराम की इस राय की ताईद एक दूसरी हदीस से मुस्तफ़ाद(हासिल)होती है यह हदीस हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है जो " कन्जुलउम्माल" जि. 14 स. 583/ पर मौजूद और ख़ासी(काफ़ी)तवील है।

इस में हज़रत ईसा अला नबिय्यिना अलैहिस्सलातु वस्सलाम

के दफ़न के थोड़े अरसा बअ्द एक हवा का ज़िक है जो यमन की तरफ़ से चलेगी रूये ज़मीन पर जितने मुसलमान उस वक़्त होंगे यह हवा उन की रूह क़ब्ज़ कर लेगी और कुर्आन को एक ही रात में उठालिया जायेगा तो इन्सानों के सीनों में और उन के घरों उस में से कुछ न रहेगा तो ऐसे लोग रह जायेंगे जिन में न कोई नबी होगा न कुर्आन का इल्म होगा और न उन में कोई मुसलमान होगा।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र व इब्ने आस़ ने फ़रमाया तो यहाँ पर हम से क़ियामत के बरपा होने का वक़्त छुपालिया गया तो हम नहीं जानते कि उन लोगों को कितनी मुह्लत दी जायेगी।

हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं :

”عن عبد الله بن عمرو أن رجلا قال له انت الذى تزعم أن الساعة تقوم الى مائة سنة قال سبحان الله و أنا اقول ذلك و من يعلم قيام الساعة الا الله انما قلت ماكانت رأس المائة للخلق منذ خلقت الدنيا الا كان عند رأس المائة أمر. قال ثم يوشك أن يخرج ابن حمل الضأن، قيل و ماابن حمل الضأن ؟ قال رومیی احد ابويه شيطان ،يسير الى المسلمين فى خمس مائة ألف بحراً حتىٰ ينزل بين عكاوصورثم يقول يا أهل السفن اخرجوا منها ،ثم أمر بها فأحرقت ،ثم يقول لهم لا قسطنطينية لكم و لا رومية حتى يفصل بيننا و بين العرب ،قال فيستمد أهل الاسلام بعضهم بعضا حتى تمدهم عدن أبين على قلصاتهم فيجتمعون فيقتتلون فتكاتبهم النصارى الذين بالشام و يخيرونهم بعورات المسلمين فيقول المسلمون الحقوا فكلكم لند عدوَ حتىٰ يقضى الله بيننا و بينكم،فيقتتلون شهراً لا يكل لهم سلاح و لا لكم و يقذف الطير عليكم و عليهم قال و

بلغنا انه اذا كان رأس الشهر قال ربكم اليوم أسلّ سيفى فأنتقم من أعدائيى و أ نصر أولياىٔ ،فيقتتلون مقتلة مارئى مثلها قط حتى ماتسير الخيل الا على الخيل و ما يسير الرجل الا على الرجل ،وما يجدون خلقا يحول بينهم و بين القسطنطينية و لا رومية ، فيقول أميرهم يومئذ لا غلول اليوم ،من أخذ اليوم شيئا فهو له،قال فيأخذون ما يخف عليهم و يدعون ما ثقل عليهم فبينما هم كذالك اذ جاء هم ان الدجال قد خلفكم فى ذراربكم، فير فضون ما فى أيديهم و يقبلون ،و يصيب الناس مجاعة شديدة حتى أن الرجل ليحرق و ترقوسه فيأكله ،وحتى أن الرجل ليحرق حجفته فيأكلها ،وحتى ان الرجل ليكم أخاه فما يسمعه الصوت من الجهد، فبينما هم كذالك اذ سمعوا صوتا من السماء أبشروا فقد أتاكم الغوث فيقولون : نزل عيسى ابن مريم فيستبشرون و يستبشربهم صل يا روح الله فيقول ان الله اكرم هذه الأمة فلا ينبغى لأ حدأن يؤمهم الا منهم، فيصلى وأمير المؤمنين بالناس قيل و امير الناس يومئذ معاوية بن ابى سفيان قال لا يصلى عيسى خلفه فاذا نصرف عيسى دعا بحربته فاتى الدجال فقال رويدك يا دجال يا كذاب فاذارآى عيسى وعرف صوته ذاب كما يذوب الرصاص اذا اصابته النار و كما تذوب الالية اذا اصابتها الشمس ولو لا انه يقول رويد الذاب حتى لا يبقى منه شيئ ،فيحمل عليه عيسى فيطعن بحربته بين ثدييه فيقتله و يفرق جنده تحت الحجارة و الشجرة و عامة جنده اليهود و المنافقون فينا دى الحجر يا روح الله هذا تحتى كافر فاقتله فيأ مر عيسى بالصليب فيكسر

JANNATI KAUN?

و بالخنزير فيقتل و تضع الحرب اوزارها حتى ان الذئب ليربض الى جنبه ما يغمزبها ،و حتى أن الصبيان ليلعبون بالحيات ماتنهشهم، و يملأ الأرض عدلا فبينماهم كذالك اذ سمعوا صوتاً قال فتحت يأجوج و مأجوج و هو كما الله تعالىٰ (وهم من كل حدب ينسلون)فيفسدون الارض كلها حتى ان اوائلهم ليأتى انهر العجاج فيشربونه كله و ان آخر هم ليقول قد كان ههنا نهر و يحاصرون عيسى و من معه بيت المقدس و يقولون ما نعلم فى الارض احد ألا ذبحناه هلموا نرمى من فى السماء فيرمون حتى ترجع اليهم سهامهم فى نصولها الدم للبلاء فيقولون ما بقى فى الارض و لا فى السماء فيقول المؤمنون يا روح الله ادع عليهم بالفناء فيدعو الله عليهم فيبعث النغف فى آذانهم فيقتلهم فى ليلة واحدة فتنتن الارض كلها من جيفهم فيقولون يا روح الله نموت من النتن فيد عو الله ،فيعث و ابلا من المطر فجعله سيلا فيقذفهم كلهم فى البحر ثم يسمعون صوتا فيقال مه ؟قيل غزى البيت الحصين فيبعثون جيشا فيجدون اوائل ذلك الجيش و يقبض عيسى ابن مريم و وليه المسلمون و غسلوه و حنطوه و كفنوه و صلوا عليه و حفر و اله و دفنوه ، فير جع أوائل الجيش و المسلمون ينفضون ايديهم من تراب قبره ،فلا يلبثون بعد ذلك الا يسيرا حتى يبعث الله الريح اليمانية ،قيل و ما الريح اليمانية ؟قال ريح من قبل اليمن ليس على الارض مؤمن يجد نسيمها الا قبضت روحه قال ويسرى على القرآن فى ليلة واحدة ولا يترك فى صدور بنى آدم و لا فى بيوتهم منه شى الا

رفعه الله فيبقى الناس ليس فيهم نبى و ليس فيهم قرآن وليس فيهم مؤمن قال عبد الله بن عمرو فعند ذلك أخفى علينا قيام الساعة فلا ندرى كم يتركون كذلك تكون الصيحة ،قال و لم تكن صيحة قط الا بغضب من الله على اهل الارض قال و قال الله تعالىٰ (وما ينظر هؤلاء الا صيحة واحدة مالها من فواق) سورة ص آية ١٥ ،قال فلا أدرى كم يتر كون كذلك . (کنز العمال جلد ۱۴ ص ۵۷۰)

इस ह़दीस से ज़ाहिर है कि सह़ाबा किराम अपने बारे में यह ख़बर दे रहे हैं कि उन से क़यामत का वक़्त छुपा लिया गया और छुपाने वाले हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम हैं तो यह छुपाना इस अम्र (बात)की दलील है कि सरकार स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम को क़यामत के बरपा होने के वक़्त की ख़बर थी मगर बताने का हुक्म न था इस लिये सह़ाबा किराम से छुपाया।

"बुख़ारी शरीफ़" किताबुलवुज़ू में हज़रत असमा बिन्ते अबूबक्र से हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई ऐसी चीज़ नहीं जो मैंने अब से पहले न देखी थी मगर यह कि उन को ऐसे मक़ाम पर देखा यहाँ तक कि जन्नत,दोज़ख़ का मुशाहिदा फ़रमालिया और बे शक मेरी त़रफ़ वह़ी आती है कि तुम अपनी क़ब्रों में आज़माये जाओगे दज्जाल के फ़ितना या उस के क़रीब तुम में से हर एक के पास फ़रिश्ते आयेंगे तो पूछा जायेगा उस शख़्स़ के बारे में(यअ़नी हुज़ूर के बारे में)तुम्हारा क्या इल्म है ? तो मोमिन या मोक़िन(शके रावी)कहेगा कि यह मुह़म्मद स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं हमारे पास रौशन निशानियाँ और हिदायत ले कर आये तो हम ने उन का कहा माना और ईमान लाये और उन की पैरवी की तो उस से कहा जायेगा सोजा भला चंगा उस से कहा जायेगा कि हमें मअ़लूम था बेशक तू मोमिन है। और मुनाफ़िक़

या मुरताब(शके रावी)कहेगा मैं नहीं जानता मैंने लोगों को कुछ कहते सुना तो मैं ने वही कहा।

हदीस पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं :

”عن جدتها اسماء بنت ابی بکر انها قالت اتیت عائشة زوج النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حین خسفت الشمس فاذا الناس قیام یصلون فاذا ھی قائمة تصلی فقلت ما للناس فاشارت بیدھا نحو السماء و قالت سبحان اللہ فقلت ایة فاشارت ان نعم فقمت حتی تجلانی الغشی و جعلت اصب فوق راسی مآء فلما انصرف رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حمد اللہ و اثنی علیہ ثما قال ما من شئ کنت لم اره الا قد رأیة فی مقامی ھذا حتی الجنة و النار و لقد و حی الی انکم تفتنون فی القبور مثل او قریباً من فتنة الدجال لا ادری ای ذلک قالت اسماء یؤتی احد کم فیقال له ما علمک بهذا الرجل فاما المؤمن او المُوْقِن لا ادری ای ذلک قالت اسمآء فیقول هو محمد رسول اللہ جآء نا بالبینات و الهدی فاجبنا و امنا واتبعنا فیقال نم صالحا فقد علمنا ان کنت لمؤمنا و اما المنافق او المرتاب لا ادری ای ذلک قالت اسماء فیقول لا ادری سمعت الناس یقولون شیًا فقلته“ (بخاری شریف جلد اول ص ۳۰،۳۱)

JANNATI KAUN?

जब मस्जिदें आरास्ता की जायें

यहाँ यह बात काबिले जिक्र है कि कुर्बे कयामत की निशानियों में जो बातें शुमार की गई वह सब ना जाइज व हराम नहीं। उन में कुछ वह भी हैं जो जाइज़ व मुबाह़ हैं मसलन मुसहफ शरीफ को सोने चाँदी से मुज़य्यन करना और मस्जिद को नक़श व निगार से आरास्ता करना अम्रे मुबाह़ है[1] । ('दुर्रे मुख्तार' जिल्द 6 स 386)में है

و جاز تحلية المصحف(ای بالذهب و الفضة)لما فيه من تعظيمه كما فی نقش المسجد .

यअ़नी "मुसहफ़ को उस की तअ़ज़ीम की ख़ातिर सोने और चाँदी से मुज़य्यन करना जाइज़ है जैसे मस्जिद को आरास्ता करना"

और मस्जिद के नक़्श व निगार के जवाज़ पर खुद हदीस इब्ने अ़ब्बास रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हुमा शाहिद(गवाह) है कि फ़रमाया **لتزخرفنها** तुम ज़रूर मस्जिदों को मुनक्क़श करोगे और हुज़ूर अ़लैहि स़्सलातु वस्सलाम से इस अम्र की मुमानअ़त नकल न फ़रमाई।

---

1. लेकिन अफ़सोस कि आज हमारी मस्जिदें दिल को मुनतशिर कर देने वाले रंग बिरंग टाइल्स दीदा जेब झालर व फानूस हफ्त रंगे कुमकुमों दिल फरेब मर मरीं फ़र्श बेश बहा नक्श व निगार वाले पर्दो ऊँचे ऊँचे मीनारों और दीगर दुनियवी जैब व जीनत और आराम व राहत की चीजों से तो आबाद हैं मगर नमाजियों से यकसर खाली हैं।सच कहा है किसी कहने वाले ने

मस्जिद तो बनाली शब भर में ईमाँ की हरारत वालों ने
मन अपना पुराना पापी था बरसों में नमाजी बन न सका

और जो नमाजी हैं वह दुनिया की सारी बातें ले कर मस्जिद ही में बैठ जाते हैं हालाँकि फुक्हा–ए–किराम ने मस्जिद में दुनिया की जाइज बातें भी करना ममनूअ़ करार दी हैं।

और कयामत की निशानियों में से यह भी कि लोग मस्जिदों में दुनिया की बातें करेंगे चुनाँचे कनजुलउम्माल जि. 14 में है :

खुद हज़रत असमान इब्ने अ़फ़्फ़ान रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अमल इस के जवाज़ पर शाहिदे अ़दल(गवाह) है। बुखारी शरीफ़ में हैं कि मस्जिद हुजूर अ़लैहिस़्सलातु वस्लाम के ज़माने में कच्ची ईट की बनी थी और इस की छत खजूर के पत्तों की थी और सुतून खजूर की लकड़ी के थे। फिर हज़रत अबूबक्र रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस में कुछ ज़्यादा न किया और हज़रत उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इस में तौसीअ़(बढ़ाना)फ़रमाई और इस को इसी तौर पर बनाया ईट और खजूर के पत्तों से जैसी हुजूर अ़लैहिस़्सलातु वस्सलाम के ज़माने में थी और उसके सुतून लकड़ी के उसी तौर पर रखे।

फिर हज़रत उ़समान रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस की बहुत तौसीअ़ तौसीअ़(चौड़ीकरण)औरा फ़ुस की दीवार को मुनक़्क़श पत्थर और चूने से बनाया और उस के सुतून नकशी(नक़्श वाले)पत्थर के बनाये और बेश कीमत लकड़ी की छत बनाई।

JANNATI KAUN?

यअ़नी "कयामत उस **لا تقوم الساعة حتى يتباهى الناس فى المساجد.** वक़्त तक न आयेगी जब तक लोग मस्जिदों में फ़ख़रिया बातें न करने लगें".

बैहक़ी ने "शोअ़बुलईमान" में इमाम हसन बस़री से रिवायत की कि फ़रमाया रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि मस्जिदों में दुनियावी बातें हुआ करेंगी तुम उन के पास न बैठना कि अल्लाह को उन की कोई परवाह नहीं।(बहारे शरीअ़त जि.1 हिस़्सा 3 स. 181) नीज़ फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कि :

اذازخرفتم مساجدكم وحليتم مصاحفكم فالدمار عليكم.

यअ़नी जब तुम अपनी मस्जिदों को सजाने लगो और कुर्आन को दीदा जेब बनाने लगो तो समझ लो कि तुम्हारी हलाकत का वक़्त करीब है(कन्ज़ुलउम्माल जि. 14 स. 210 (फ़ारूक़ी गुफ़िरलहु)

हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

عن عبد الله بن عمر اخبره ان المسجد كان على عهد رسول الله تعالىٰ عليه وسلم مبنيا باللبن وسقفه الجريد وعمده خشب النخل فلم يزد فيه ابو بكر شيئا وزاد فيه عمر وبناه على بنيانه فى عهد رسول الله تعالىٰ عليه وسلم باللبن والجريد واعاد عمده خشبا ثم غيره عثمان فزاد فيه زيادة كثيرة وبنى جداره بالحجارة المنقوشة والقصة وجعل عمده من حجارة منقوشة وسقفه بالساج. (بخاری شریف جلد اول ص ۶۴)

यहाँ से मअ़लूम हुआ कि हर नई बात जो रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के ज़माने में न थी नाजाइज़ नहीं बल्कि यह (बिदअ़त)कभी वाजिब होती है जैसे गुमराहों के रद के लिये दलाइल क़ाइम करना और किताब व सुन्नत को समझने के लिये नहव व सर्फ़ (अ़रबी सीखने के काइदे)व और मबादी को सीखना और कभी मुस्तहब होती है जैसे सराये और मदरसे बनाना और हर वह नेकी जो सदरे अव्वल में न थी और कभी मकरू होती है जैसे एक क़ौम पर मस्जिद का नक़्श व निगार और कभी मुबाह़ होती है जैसे लज़ीज़ खाने कपड़े और तोसिक़ वग़ैरा कमा फ़ी(रद्दुल मुह़तार)

और ज़ाब्ता यह है कि जिस चीज़ से अल्लाह व रसूल जल्ल व अ़ला व स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वस़ल्लम ने सख़्ती के साथ मनअ़ फ़रमाया वह ममनूअ़ व नाजाइज़ है और जिस से मनअ़ न फ़रमाया वह ममनूअ़ नहीं बल्कि मुबाह़ है और **"الاصل فى الاشياء اباحة"** अश्या में अस़ल इबाह़त है।

जब महीने घट जायें

"मजमअ् बिहारूलअन्वार" में है : अहले हयअ्त ने कहा कि दाइरातुलबुरूज दाइरा मअ्दलुन्नहार पर मुस्तक़बिल में मुन्तबिक़ हो जायेगा। तौज़ीह इस मक़ाम की यह है कि कुतबे शुमाली और कुतबे जुनूबी के दरमियान एक दाइरा अज़ीमा माना गया है जिस का फ़स्ल दोनों कुतबों से बराबर है यअ्नी वह दाइरा अ़ज़ीमा कुतबे शुमाली से 90 दर्जा पर है और कुतबे जुनूबी से भी 90 दर्जा पर है उसी दाइरा–ए–अज़ीमा का नाम दाइरा–ए–मअ्दलुन्नहार है।

12 मार्च और 24 सितम्मब को आफ़ताब दाइरा–ए–मअ्दि–लुन्नहार पर हरकत करता है 22 जून को आफ़ताब जिस नुक़्ते से तुलूअ् करता है उस नुक़्ते से 23 दर्जा 27 दक़ीक़ा जुनूब में मअ्दिलुन्नहार है

यूहीं 22 जून को जिस नुक़्ते पर आफ़ताब गुरूब करता है उस नुक़्ते से भी 23 दर्जा 27 दक़ीक़ा जुनूब में मअ्दिलुन्नहार है और 22 दिसम्ब को आफ़ताब जिस नुक़्ते से तुलूअ् करता है उस नुक़्ते से 23 दर्जा 27 दक़ीक़ा शिमाल में मअ्दुलुन्नहार है।

यूँही 22 दिस्मबर को जिस नुक़्ता पर आफ़ताब गुरूब करता है उस नुक़ता से भी 23 दरजा 27 दक़ीक़ा शुमाल में मअ्दलुन्नहार है यअ्नी 22जून और 22 दिस्मबर के मत़लअ् के ऐन वस्त़ में मअ्दलुन्नहार है।

यूँही22 जून और 22 दिसम्बर के मत़लअ् के जाये गुरूब(गुरूब की जगह) के वीच व बीच मअ्दलुन्नहार है।

इस को मअ्दलुन्नहार इस लिये कहा जाता है कि सूरज जब इस दाइरा के सीध में आता है तो तमाम मक़ामात में दिन रात तक़रीबन बराबर होते हैं जो दाइरा–ए–मअ्दलुन्नहार को इस तरह क़तअ् करता है कि दोनों के कुतबों में 23 दरजा 27 दक़ीक़ा फ़स्ल रहता है उसी दाइरा–ए–अज़ीमा को दाइरातुलबुरूज या मन्तिकतुलबुरूज कहते हैं। इस दाइरा से सितारों की हरकात की मिक़दारे तूल और मील शम्स मअ्लूम होता है।

यहाँ से मअ्लूम हुआ कि जब तक यह दाइरा–ए–अ़ज़ीमा, दाइरा–ए–मअ्दुलुन्नहार को इस तौर पर काटता हुआ चलेगा कि मुनदरजा बाला फ़ासला दोनों में क़ाइम रहे और जब तक ह़रकते शम्स मअ्मूल के मुताबिक़ रहे।

"तफ़सीरे कबीर" में इमाम राज़ी अ़लैहिर्रहमा न "وَاِذَاالشَّمْسُ كُوِّرَتْ" की तफ़सीर में एक कौल यह नक़्ल किया :

"القیت و رمیت عن الفلک" यअ्नी जब सूरज फ़लक से नीचे डाल दिया जाये। (तफ़सीरे कबीर जि. 31 स. 66)

इस से इस कौल की ताईद और ह़दीस की तस़्दीक़ मुस्तफ़ाद होती है और इस सूरत में ख़ुद आयते करीमा से मज़मूने ह़दीस की तस़्दीक़ साबित है और ह़दीस का मज़मून मफ़हूमे आयत का बयान है कि सूरज जब अपने मदार से नीचे जो ज़मीन से करोड़ों मील ऊपर है अपने मदार से नीचे फ़ेंका जायेगा तो ला मुह़ाला उस का दाइरा छोटा होता जायेगा और नीचे आने के सबब उस की ह़रकत तेज़ हो जायेगी तो मुसाफ़त भी कम और ह़रकते शम्स भी तेज़ होगी।

लिहाज़ा बदाहतन ज़माने की मिक़दार घट जायेगी ह़ज़रत अबूहुरैरा से ह़दीस मरवी है कि जब क़यामत क़रीब होगी ज़माना क़रीब होजायेगा (थोड़ा रह जायेगा) तो साल महीना की त़रह़ और महीना जुमआ़ की त़रह़ और जुमआ़ की मुद्दत इतनी होगी जितनी देर में खजूर की टहनी आग में जल जाये।

ह़दीसे पाक के अल्फ़ाज़ यह हैं।

عَنْ ابی هریرة قال قال اذا اقتربت الساعة تقارب الزمان فتکون السنة کالشهر و الشهر کالجمعة و الجمعة کاحتراق السعفة فی النار" (کنز جلد۱۴ص۲۲۷)

साल और महीना वग़ैरा की मिक़दार क़ाइम रहेगी और यह फ़ासिला जितना कम होता जायेगा उस के नतीजा में दाइरातुलबुरूज मअ्दलुन्नहार से बतदरीज नज़्दीक होता जायेगा और ज़माना की मिक़दार घटती जायेगी।

यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि यह जो फ़रमाया गया कि महीने घट

जायेंगे अपने ज़ाहिरी मअ्ना पर है और कोई वजह हक़ीक़ी मअ्ना से मानेअ(रोकती)नहीं तो वही हक़ीक़तन मुराद है और हदीस जो आख़िर में ज़िक्र की गई वह फ़िक़रा–ए–हदीस से फ़िक़रा–ए–मज़कूरा की तफ़सीर है **وَ للّٰه الحمد.**

बिलजुमला मज़मूने हदीस अपने ज़ाहिर पर है और ज़ाहिरी मअ्ना मुराद लेने में न कोई इरितहाला(मजबूरी) है न कोई और दलीले शरई ऐसी है जो ज़ाहिरी मअ्ना से उदूल की मुक़तज़ी है (न कोई दलीले शरई ऐसी है जो ज़ाहिरी मअ्ना मानने से रोकती हो) है बल्कि "बुख़ारी शरीफ़" में उस मज़मून को मुअय्यद हदीस मौजूद है जिस में "तक़ारिबुज़्ज़मान" फ़रमाया गया जिस से ज़माने का बाहम क़रीब होना ज़ाहिरन मुस्तफ़ाद(साबित) है " मुस्लिम शरीफ़" की हदीस में है कि : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दज्जाल का ज़िक्र फ़रमाया सहाबा ने अर्ज़ किया ज़मीन में दज्जाल की मुद्दते इक़ामत (ठहरने की मुद्दत)कितनी होगी?फ़रमाया चालीस दिन। एक दिन एक साल जैसा होगा और एक दिन एक महीना जैसा होगा और एक दिन जुमआ जैसा यअ्नी एक हफ़्ता के बराबर होगा और दज्जाल के बाक़ी अय्याम तुम्हारे दिनों जैसे होंगे तो अर्ज़ की गई या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो वह दिन जो एक साल बराबर होगा तो क्या हमें उस में एक दिन की नमाज़ पढ़ना काफ़ी होगा कहा नहीं उस के लिय अन्दाज़ा रखो।

अल्लामा शलबी ,इमाम कमालुद्दीन हुम्माम से हाशिया तबीयीनुलहक़ाइक़ से नाक़िल उन्हों ने इस हदीस को नक़्ल करने के बअ्द फ़रमाया बे शक सरकार अलैहिस्सलाम ने उन हदीस में अपने इरशाद में अस्र की तीन सौ नमाज़ें वाजिब फ़रमाई इस से पहले कि साया एक मिस्ल या दो मिस्ल हो और उसी पर बाक़ी नमाज़ों को क़यास करो। (तबीयीनुलहक़ाइक़ जि.1 स 81)

यहाँ से ज़ाहिर हुआ तक़ारिबे ज़मान और नुक़्साने मिक़दारे साल व अय्याम अपने ज़ाहिर पर है जिस में किसी तावील की गुन्जाइश नहीं बल्कि हदीसे मुस्लिम साफ़ साफ़ दाफ़ेअ् तावील है यहाँ

से यह भी जाहिर हुआ कि सूरज का मीले शम्स जो मज़कूर हुआ उस का उसी मिकदार मोअ्ताद पर काइम रहना जरूरी नहीं बल्कि उस में बतदरीज कमी होती रहेगी तेजी से मौसम की तबदीली जिस का मुशाहिदा है उस की रौशनी दलील है नीज़ कुर्आन शरीफ़ में फरमाया :

"والشمس تجری لمستقرلها ذلک تقدیر العزیز العلیم"

यअ्नी "और सूरज चलता है अपने ठहराओ के लिये यह हुक्म है ज़बर दस्त इल्म वाले का"(तर्जमा कन्जुल ईमान)

आयते करीमा से जाहिर कि सूरज मुसल्सल अपने मुस्तकर की तरफ़ चल रहा है और जब सूरज अपने मुस्तक़र की तरफ़ रवाँ दवाँ है तो ज़रूर उस की उस के लिये एक मसाफ़त मुक़द्दर है जिसे उस को कयामत तक तै करना है लिहाज़ा किसी एक मुस्तक़र पर नहीं ठहरता बल्कि जब किसी मुस्तकर पर पहुँचता है बहुक्मे इलाही वहाँ से दूसरे मुस्तक़र की तरफ़ रवाँ हो जाता है यही सिलसिला उस की इन्तिहा–ए– सैर तक यअ्नी क़यामत तक जारी रहेगा।

JANNATI KAUN?

तफ़सीरे कबीर में है :

وَعَلیٰ هٰذا فمعناه تجری الشمس وقت استقرارها ای کلما استقرت زمانا امرت بالجری فجرت و یحمیل ان تکون بمعنی الی ای الی مستقر لها و یؤید هذا قرأة من قرأ ‹والشمس تجری الی مستقرلها› وعلی هذا ففی ذلک المستقر و جوه ‹الاول› یوم القیامة و عنده تستقرو لا یبقی لها حر کة.

यअ्नी "और उस तकदीर पर जब कि लाम इफ़ादा वक़्त के लिये हो तो आयत का मअ्ना यह है कि सूरज अपने ज़मान–ए–इस्तिक़रार में चलता है यअ्नी जब किसी ज़माना में किसी मुस्तकर पर पहुँचता है उस को वहाँ से चलने का हुक्म होता है तो चल पड़ता है और यह इहतिमाल है कि लाम बमअ्ना इला हुवा यअ्नी सूरज अपने मुस्तकर की तरफ चल रहा है और उस तौजीह की मुअय्यद उस की किरात है

जिस ने यूँ पढ़ा "وَالشمس تجری الی مستقر لها" और उस तौजीह पर उस मुस्तक़र मज़कूर में चन्द तोजीहात हैं पहली यह कि वह मुस्तक़र यौमे क़यामत है और उस दिन सूरज ठहर जायेगा और उस में ह़रकत न रहेगी।(71/26)

उसी में है :

"قوله(ذلک)یحتمل ان یکون اشارة الی جری الشمس أی ذلک الجری تقدیر الله (الی ان قال)ان الشمس فی ستة اشهر کل یوم تمر علی مسامتة شئ لم تمر من امسها علی تلک المسامتة

यअ्नी "और अल्लाह का फ़रमान "ज़ालिका्"में इह़तिमाल है कि उस में इशारा हो सूरज के चलने की त़रफ़ यअ्नी सूरज का यह चलना अल्लाह की तक़दीर है यहाँ तक कि उन्होंने कहा कि सूरज छः महीनों में हर दिन किसी शय की सिम्त से गुज़रता है कि गुज़श्ता कल उस सिम्त से न गुज़रा था। (72/26)

इस से ज़ाहिर कि सूरज मुसलसल चल रहा है और एक मुसाफ़त तै कर रहा है और उसे किसी मुस्तक़र पर क़रार नहीं। अअ्ला ह़ज़रत ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द की एक क़िरात नक़्ल की कि उन्हों ने यूँ पढ़ा "لَا مستقرلها" यह तफ़ावुते मील और बतदरीज इरतिफ़ाअ् व इन्ख़िफ़ाज़ और बोअ्द व कु़र्ब में तफ़ावुत का मुक़तज़ी है और आख़िर कार क़यामत के नज़दीक सूरज के ज़मीन से ज़्यादा करीब होन पर दलालत करता है जो तक़ारिबे ज़मान और यौम व साल में नुक़्सान का मुक़तज़ी है जिस का इफ़ादा अह़ादीस ने फ़रमाया(क़यामत के नज़्दीक सूरज के ज़मीन से ज़्यादा क़रीब होने की वजह से ज़माना क़रीब हो जायेगा और दिनों व साल कम हो जायेंगे यअ्नी छोटे हो जायेंगे) وَفی الآیة وجوه اخرو القرآن محتج به علی جمیع وجوهه کما افاده الامام سیدی امجد مولانا الشیخ احمد رضا قدس سره نقلا عن الزرقانی علی المواهب.

जब औरतें तुर्की घोड़ों पर बैठें

यअ़नी फख्र व मुबाहात के तौर पर मर्दों से मुशाबहत इख़्तियार करें। चुनाँचे मुत्तसिलन फ़रमाया गया :

" और औरतें मर्दों से मुशाबहत इख़्तियार करें "

तो यह क़रीना–ए–साबिक़ा है मज़ीद बरआँ उस में इफ़ादा–ए–उ़मूम है यअ़नी ख़ास़ शह सवारी ही नहीं बल्कि और भी मरदाना अत़वार अपनायेंगी और मुस्तहक़े जन्ब(गुनाह की मुस्तहक़) होगी[1] बिला ज़रूरते स़हीह़ा औरत को घोड़े पर चढ़ना मनअ़ है कि यह भी एक क़िस्म का मरदाना काम है ह़दीस में उस पर लअ़नत आई इब्ने ह़ब्बान अपनी स़हीह़ में अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से रावी रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

"یکون فی آخر امتی نساء یرکبون علی مرج کا شباہ الرجال(الحدیث)وفی آخرہ العنوھن فانھن ملعونات.

यअ़नी "मेरी उम्मत के आख़िर में कुछ ऐसी औ़रतें होंगी जो

1.आज हम देख रहे हैं कि लड़कियाँ भी वे झिझक मर्दों की तरह बाल रखती हैं जिन्स पैन्ट और टी शर्ट जैसे तंग व चुस्त कपड़े पहन रही हैं जिस से उन के बदन के सारे नशीब व फ़राज़ वाज़ेह हो जाते हैं यअ़नी कपड़ा पहनने के बावुजूद भी वह नंगी ही होती हैं और यह दअ़वते गुनाह देने के मुतरादिफ़ है।

चुनाँचे ह़दीस पाक में है : **عن ابن عمر قال لا تقوم الساعة حتی یتسافد الناس تسافد البھائم فی الطرق.** यअ़नी ह़ज़रत अ़ब्दुल्ला इब्ने उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फ़रमाते हैं कि क़यामत उस वक़्त तक न काइम होगी जब तक कि लोग जानवरों की तरह रास्तों में जुफ़्ती न करने लगें।

(कन्ज़ुल उ़म्माल जि.14 स. 246)

आज जावजा सड़कों और मेलों में एअ़लनिया ज़ना कारी की वारदातें होने लगी हैं ,जिन की ख़बरें हम आये दिन अखबारात में मुलाहिज़ा करते हैं। ज़ाहिर है कि जब इस क़द्र बे ह़याई व उ़रयानियत बढ़जायेगी तो अन्जाम यही होगा। (फ़ारूक़ी गुफ़िरलहु)

मर्दों की तरह जानवरों पर सवार होंगी (अलहदीस)और उस के आख़िर में यह अल्फ़ाज़ आये : उन औरतों पर लअ्नत भेजो क्योंकि वह मलऊन हैं। (मोरिदुज़्ज़मान स. 351)

सुनन अबी दाऊद में इब्ने अबी मलीका से मरवी है:

"قیل لعائشة ان امرأة تلبس النعل فقالت لعن رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم الرجلة من النساء.

यअ्नी "उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु तआला अ़नहा से कहा गया : एक औरत मर्दाना जूता पहनती है फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने उन औरतों पर लअ्नत फ़रमाई जो मरदानी वज़अ् इख़्तियार करें"(210/2)

ज़नाने अ़रब(अ़रब की औरतें)जो ओढ़नी ओढ़तीं ,हिफ़ाज़त के लिये सर पर पेच दे लेतीं उस पर यह इरशाद हुआ कि एक पेच दें दो न दें कि अ़मामा वाले मर्दों से मुशाबहत न होजाये क्योंकि औरतों को मर्दों से और मर्दों को औरतों से "तशब्बोह" हराम है।

JANNATI KAUN?

इमाम अहमद व अबूदाऊद व हाकिम ने बसनद हसन उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत की:

"ان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم دخل علیها و هی تختمر فقال لیة لا لیتین. यअ्नी "नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम सय्यिदा उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अ़न्हा के हाँ तशरीफ़ ले गये तो देखा कि वह ओढ़नी ओढ़ रही हैं तो इरशाद फ़रमाया सर पर सिर्फ़ एक पेच दो, दो न हों (सुनन अबू दाऊद 212/12)

अ़ब्दुल्ला इब्ने उ़मर रदियल्लाहु तआला अ़न्हा ने उम्मे सईद बिन्ते उम्मे जमील को कमान लगाये मर्दानी चाल चलते देखा तो इरशाद फ़रमाया :

"سمعت رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم یقول

لیس منامن تشبه بالرجال من النساء و لا من تشبه بالنساء من الرجال رواه احمد و الطبرانی.

यअ़नी " मैं ने रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते सुना कि : वह औ़रत हम में से नहीं जो मर्दों से मुशाबहत इख़्तियार करे और वह मर्द भी जो औ़रतों से मुशाबहत इख़्तियार करे,उसे इमाम अह़मद व इमाम त़बरानी ने रिवायत किया" (मुसनदे अह़मद इब्ने ह़मबल)

औ़रत को अपने सर के बाल कतरना ह़राम है और कतरे तो मलऊ़ना कि यह मर्दों से मुशाबहत है और औ़रतों का मर्दों से तशब्बोह ह़राम दुर्रे मुख़्तार में है :

قطعت شعر رأسها اثمت و لعنت و المعنی المؤثرة التشبه بالرجال.

यअ़नी " किसी औ़रत ने सर के बाल कतर डाले तो गुनहगार हुई नीज़ उस पर अल्लाह की लअ़नत हुई उस में जो इल्लत मुअस्सिरा है वह मर्दों से "तशब्बोह" है"। (250/2)

JANNATI KAUN?

जब औ़रतें मर्दों से और मर्द औ़रतों से मुशाबहत करें

यह भी क़यामत की निशानियों में से है और यह निशानी वाक़ेअ़ हो चुकी ज़माना–ए–ह़ाल में ब–कसरत उस का मुशाहिदा हो रहा है और यह शरअ़न ममनूअ़ है।

मुसनद इमाम अह़मद जि. 1 स. 339/पर है :

"لعن الله المتشبهين من الرجال بالنساء و المتشبهات من النساء بالرجال. यअ़नी "अल्लाह की लअ़नत है उन लोगों पर जो औ़रतों की वज़अ़ इख़्तियार करें और उन औ़रतों पर जो मर्दों की वज़अ़ इख़्तियार करें"

आज औ़रतों और मर्दों ने बहुत से त़रीक़े एक दूसरे से मुशाबहत के इख़्तियार कर लिये हैं। उन्हीं में से एक मरव्वजा चैन की घड़ी है जिसे आ़म तौर पर मर्दों में पहनने का रिवाज हो गया है।

यहाँ तक कि बहुत सारे इमाम, मौलवी, और मुफ़्ती भी बे दरेग़ उस को पहने हुए नज़र आते हैं। यह क़तअन ज़ीनते ममनूआ और तहल्ली नाजाइज़ है उस का जवाज अअ्ला हज़रत फ़ाज़िल बरेलवी कुद्दिस सिर्रुहु के कलिमात से बताया जा रहा है हालाँकि उन के कलिमात से हरगिज़ उस का जवाज़ साबित नहीं होता।

अव्वलनः—तो यह चैन जो हाथ में पहनी जाती है उन (अअ्ला हज़रत)के ज़माने में थी ही नहीं।

सानियनः—जिस चैन पर उस को क़यास किया जा रहा है उस के तअल्लुक़ से अअ्ला हज़रत अज़ीमुलबरकत फ़ाज़िले बरेलवी कुद्दिस सिर्रुहु मुतअ़द्दिद जगह जो कुछ फ़रमाते हैं उस से उस की साफ़ हुरमत मुस्तफ़ाद होती है।

अअ्ला हज़रत से यह सवाल हुआ कि :

फ़ी ज़मानिना कुर्तों और सदरियों में चाँदी के बोताम मअ् ज़न्ज़ीर लगाते हैं जाइज़ हैं या नहीं ? इला आख़िरिही''

उस के जवाब में अअ्ला हज़रत फ़रमाते हैं :

''चाँदी के सिर्फ़ बोताम टाँकने में हरज नहीं कि कुतुबे फ़िक़्ह में सोने की घुन्डीयों की इजाज़त मुसर्रह मगर यह चाँदी की ज़नजीरें कि बोतामों के साथ लगाई जाती हैं। सख़्त महल्ले नज़र हैं कलिमात अइम्मा से जब तक उन के जवाज़ की दलील वाज़ेह कि आफ़ताब रौशन की तरह ज़ाहिर व जली हो,न मिले हुक्मे जवाज़ देना महज़ जुरअ्त है कि चाँदी सोने के इस्तिअ्माल में अस्ल हुरमत है। शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अ़ब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी कुद्दिस सिर्रुहु ''अशअ़तुल लमआ़त शरहे मिश्कात''में फ़रमाते हैं :अस्ल दर इस्तिअ्माले जहब व फ़िद्दा हुरमत अस्त'' यअ्नी जब शरअ् मुतह्हर ने हुक्मे तहरीम(हराम होने का हुक्म) फ़रमा कर उन की इबाहते अस्लिया को नस्ख़ कर दिया तो अब उन में अस्ल हुरमत होगई कि जब तक किसी

ख़ास चीज़ की रुख़्सत शरअ़ से वाज़ेह व आश्कार न हो,हर गिज़ इजाज़त न दी जायेगी बल्कि मुतलक़ तहरीम के तहत(हराम होने में दाख़िल रहेगी।

ثانیاً! واقول وجہ ھذا ज़ाहिर है कि उन ज़न्जीरों के उस तरह लगाने से तज़य्युन मक़सूद होता है बल्कि तज़य्युन ही मक़सूद होता है और ऐसे ही तज़य्युन को तहल्ली कहते हैं। उ़लमा तसरीह फ़रमाते हैं मर्द को सिवा अँगूठी पेटी और तलवार के सामाने मिस्ल पर तले वग़ैरा के चाँदी से तहल्ली किसी तरह जाइज़ नहीं।(फतावा रजवीया जि.9 स. 34)

नीज़ उसी के स. 298/299 पर फ़रमाते हैं :

"ज़न्जीरों के लिये न ज़र (बटन) की तरह कोई नस़ फ़क़ीर ने पाया न जवाज़ पर कोई साफ़ दलील बल्कि वह ब-ज़ाहिर मक़सूद बिनफ़िसहा हैं , न ज़र की तरह कपड़े की कोई ग़रज उन से मुतअ़ल्लिक़ ,न इ़ल्म की तरह सौब में मुस्तहलक के ताबेअ़ सौब ठहरें न उन से सिंगार और ज़ीनत के सिवा कोई फ़ायदा मक़सूद और वह ज़ेवरे ज़नान (औरतों के ज़ेवर) से कमाल मुशाबिह हैं उन की हयअ़त (बनावट)व ह़ालत बिल्कुल सहारों की सी है कि एक त़रफ़ उन के कुन्डों में बालियाँ पिरोकर उन को दोनों जानिब से पेशानी के बालों पर ला कर काटा डाल कर मिला देते हैं वह भी इन ज़न्जीरों की तरह लड़ियाँ ही हैं बल्कि उन से अलावा तज़य्युन एक फ़ाइदा भी मक़सूद होता है कि बालियों का बोझ कानों पर न पड़े यह उन्हें उठा कर सहारा दिये रहें। इसी लिये उन को सहारे कहते हैं और इन ज़न्जीरों की लड़ियाँ सिवा ज़ीनत के कोई फ़ायदा नहीं देतीं तो ब निस्बत सहारों के उन की लड़ियाँ झूमर की लड़ियों से ज़्यादह हैं। और सहारों की तरह यह भी दाख़िल मलबूस(पहनने में शामिल)हैं बल्कि उन का सिर्फ़ ज़ीनत के लिये बिज़्ज़ात मक़सूद और कपड़े की अग़राज़ से महज़ बे तअ़ल्लुक़ व नामुस्तहलक होना झूमर की तरह

उन के और भी ज़्यादा लब्स मुस्तकिल का मुकतजी है(बटन के चेन की लडियो झूमर पहनने की तरह है जो ज़ीनत में शामिल है और बतौर ज़ीनत पहनना मर्द के लिए जाइज नहीं) इला आखिरिही"

यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि अअ्ला हजरत अज़ीमुलबरकत कुद्दिस सिर्रुहू के ज़माने में जो जेबी घड़ी की चैन राइज थी जिसे कुरते सदरी वगैरा में लगा कर घड़ी जेब में रखते थे,उन के नज़दीक उस का भी वही हुक्म है जो ज़ेवर का है तो यह चीज़ जो दरती घड़ी में लगाई जाती है बदरजा–ए–ऊला ज़ेवर है और उस के पहनने से तहल्ली व जेबाइश मक़सूद होना ज़ाहिर तर है।

लिहाज़ा उस की हुर्मत अज़हर और उस में औरतों से तशब्बोह वाहिर व रौशन(इस में औरतों से मुशाबहत बिलकुल ज़ाहिर और रौशन है) तर वहाँ पहनने से मुशाबहत होने की वजह से हुक्मे हुरमत(हराम होने का हुक्म)दिया तो यहाँ पहनने में कोई शुबह ही नहीं तो यहाँ खालिस हुरमत है न कि शुबहे हुरमत(न कि हराम होने का शक)!

JANNATI KAUN?

जिस के बारे में फ़रमाया :

"मुहर्रमात में शुबह मिस्ले यक़ीन है तो उस में चीज़ की हुरमत व निस्बत ज़नजीर के खूब आश्कार(ज़ाहिर)है"

यहाँ से मुजव्वेज़ीन(जाइज़ करने वाले)के क़यास की हालत ज़ाहिर हो गई हमारी दानिस्त(इल्म)में अअ्ला हज़रत अ़ज़ीमुलबरकत कुद्दिस सिर्रुहु के कलिमात में न तआरुज़(टकराव)है, न उन के किसी फतवे से उस चीज़ या उस ज़न्जीर का जवाज़ निकलता है।

बिल्फर्ज़ अगर सूरते तआरुज़(टकराव की शक्ल)हो भी तो रुजूअ़ उन तसरीहात की तरफ़ लाज़िम है कि खुद क़वी और शुबह से साफ़ है और जिस कलिमा से उस का ख़िलाफ़ मुतवह्हम(शक)हो, उस की तावील लाजिम है और उस तरह ततबीक(जो बातें एक दूसरे के बज़ाहिर ख़िलाफ़ हो लेकिन उन में मुवाफ़िकत बयान करना)देना

ज़रूरी है।

लिहाज़ा अगर "अत्तीबुलवजीज़" में अल्लामा शामी की उस बहस के पेशे नजर कि यह वजऐ लुब्स(पहनने के लिए बनना)है या महज तअ़लीके ज़न्जीर(जंजीर लटकाने के लिए),अअ़्ला हज़रत ने यह फ़रमादिया :

"एहतिराज औला है या उस से बचना चाहिये"

सो तावील उसी कलिमा–ए–तवह्हुमे जवाज(जिस जुमले से जाइज़ होने का वहम होना)) की ज़रूरी है ताकि दूसरे फ़तावा से तआरुज(टकराव)लाज़िम न आये बसाऔक़ात "औला"या उस के हम मअ़ना लफ़्ज का इतलाक़ "वाजिब" पर करते हैं। चुनाँचे"अनाया" जि. अव्वल स. 242 पर है :

"وَ كذالك ان صلى على النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم يستمعون و ينصتون سأل أبويوسف أبا حنيفة رحمهما الله اذا ذكر الامام هل يذكرون و يصلون على النبى صلى الله تعالىٰ عليه و سلم أحب الى أن يستمعوا و ينصتوا و لم يقل لا يذكرون و لا يصلون فقد أحسن فى العبارة و احتشم من أن يقول لا يذكرون و لا يصلون على النبى صلى الله تعالىٰ عليه وسلم و انما كان الاستماع و الا نصات احب لا ن ذكر الله والصلوٰة على النبى عليه السلام ليس بفرض و استماع الخطبة فرض.

यअ़नी " यूँहीं अगर ख़तीब नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम पर दुरूद पढ़े तो लोगों को सुनना और चुप रहना लाज़िम है इमाम अबू यूसुफ ने इमाम अअ़ज़म से पूछा इमाम अगर ज़िक्र करे क्या मुक़तदी भी ज़िक्र करें और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर दुरूद भेजें ?इमामे अअ़ज़म ने फरमाया मुझे यह पसन्द है कि वह लोग खुतबा सुनें और

ख़ामोश रहें और इमामे अअ्ज़म ने यह न कहा कि ज़िक्र न करें और दुरूद न भेजें तो इस तरह तअ्बीर में हुसने उसलूब से काम लिया और यह कहने से बचे कि ज़िक्र न करें और दुरूद न भेजें और सुनना और ख़ामोश रहना इस लिए पसन्दीदा ठहरा कि अल्लाह का ज़िक्र और नबी अ़लैहिस्सलाम पर दुरूद भेजना फ़र्ज़ नहीं और खुत़बा का सुनना फ़र्ज़ है।

नीज़ "जौहरा नय्यिरा" जि. 2 स. 260 पर है :

"وَ ینبغی ان یکون قدر فضة الخاتم مثقالاً ولا یزاد علیه و قیل لا یبلغ به المثقال" यअ्नी " अंगूठी की चाँदी की मिक़दार एक मिसक़ाल होना चाहिये और उस से ज़्यादा करना मनअ् है और एक क़ौल यह है कि चाँदी की मिक़दार पूरी एक मिसक़ाल न करे"।

इस जगह भी **"یجب "** (वाजिब)की जगह **ینبغی**(चाहिये) फ़रमाया खुद" फ़तावा रज़विया" में उस की नज़ीर यह इरशाद है अ़श्रा मुह़र्रम तीन रंगों के बाबत फ़रमाते है:

" मुसलमान को चाहिये अ़शरा मुबारका में तीन रंगों से बचे सब्ज, सुर्ख़, सियाह, सब्ज़ की वजहें तो मअ्लूम हो गयी और सुर्ख़ आज कल नासिबी ख़बीस खुशी की नियत से पहनते हैं। सियाह में ऊदा, नीला, कासनी, सब्ज़ में काही, धानी परस्ती, सुर्ख़ में गुलाबी ,अ़नाबी नारांगी सब दाख़िल हैं। गर्ज़ जिस पर उन में कोई रंग सादिक आये अगर सोग या खुशी की नीयत से पहने जब तो खुद ही हराम है वरना उन की मुशाबहत से बचना बेहतर "इला आख़िरिही। (फ़तावा रज़विया जि. 9 स. 301)

यहाँ बेहतर और हराम के तक़ाबुल से बजाहिर यह मअ्लूम होता है कि अगर सोग या खुशी की नियत न हो तो उन कपड़ों को पहनना जाइज़ बल्कि अच्छा बेहतर के मुकाबिल विह यअ्नी अच्छा है हालाँकि सियाके कलाम(बयान का अन्दाज़)से यह मअ्ना किस क़द्र

बेगाना हैं। यह अम्र किसी से पोशीदा नहीं तो क़तअ़न यहाँ बेहतर मअ़ना तफ़ज़्ज़ुल पर नहीं ,न महज़ मुस्तहब के मअ़ना में और यहाँ इबारत में लफ़्ज़ ''चाहिये'' भी महज़ मुस्तहब के मअ़ना में नहीं कि मुक़ाबिल वाजिब क़रार पाये बल्कि मुराद यह है कि अगर यह नियत न भी हो जब भी उन की मुशाबहत से बचना औला व वाजिब है तो यहाँ भी लफ़्ज़ ''चाहिये और ''बेहतर'' ''वाजिब''की जगह इस्तिअ़माल हुआ है इस लिये पहले यह कहा :

''अ़श्रा मुहर्रम के सब्ज़ रंगे हुये कपड़े भी नाजाइज़ हैं। यह भी सोग की ग़र्ज़ से हैं इला आख़िरिही (फतावा रज़विया जि. 9 स. 300)

शायद एक वजह उस जेबी घड़ी की ज़न्जीर के जवाज़ की मुम्किन है उस सूरत में जबकि वह चीज़ चाँदी व सोने के अ़लावा किसी और धात की हो और उस से तहल्ली ज़ेबाइश व नुमाइश मक़सूद न हो बल्कि घड़ी की हिफ़ाज़त के लिये कपड़े में छुपा कर लगाई जाये।

JANNATI KAUN?

इस सूरत में अअ़ला हज़रत क़ुद्दिस सिर्रुहु के कलिमात स अगर उस चीज़ के जवाज़ का ईहाम(वहम)होता है तो उस का महमल यही सूरत है और उसी सूरत पर उन के कलिमात को महमूल करने से उन के फ़तावा में तआ़रुज़ का वहम मुन्दफ़अ़(दूर) हो जाता है मगर यह सूरत जेबी घड़ी की चैन में नहीं तो उस पर क़यास दुरुस्त नहीं कि दोनों सूरतें जुदागाना हैं।

जब ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई जाये

अलामते क़यामत में सरकार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह भी बताया कि लोग ग़ैरुल्लाह की क़सम खायेंगे और ग़ैरुल्लाह की क़सम शरअन ममनूअ(अल्लाह के अलावा किसी की क़सम खाना जाइज नहीं) है।

हदीस शरीफ में है :

من حلف بغير الله فقد اشرک. यअ़नी "जो ग़ैरुल्लाह की क़सम खाये वह मुश्रिक है" (फ़ैज़ुलक़दीर जि. 6 स. 120)

यअ़नी हक़ीक़तन मुश्रिक है अगर ग़ैरुल्लाह की वह तअ़ज़ीम मुराद ले जो अल्लाह के लिये ख़ास है उसी क़बील(उसी तरह) से बुतों की क़सम खाना है।

हज़रत अबूहुरैरा से हदीस है : जो क़सम खाये तो अपनी क़सम में यूँ कहे "लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम" तो वह कलिमा–ए–तौहीद पढ़े और जो अपने साथी से कहे आओ तुम से जुआ खेलूँ तो वह सदक़ा दे।

हदीस के इस फ़िक़रे से मअ़लूम हुआ कि गुनाह का इरादा जब दिल में पुख़्ता हो जाये तो यह भी गुनाह है और उस को ज़ाहिर करना दूसरा गुनाह सदक़ा देने का हुक्म उस गुनाह के कफ़्फ़ारे के लिये बतौर इस्तिहबाब है।

हदीस में है :

"الصدقة تطفی غضب الرب کما یطفئ الماء النار. यअ़नी सदक़ा अल्लाह के ग़ज़ब की आतिश को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को। (तबरानी जि. 19 स. 145)

इस हदीस में **"لااله الا اللّه"** पढ़ने का जो हुक्म दिया इस में दो एहितमाल है एक यह कि नो मुस्लिम से आदते साबिक़ा (पुरानी आदत)की वजह से सहवन(भूलकर)**सब्क़ते लिसानी**(बोलने की तेज़ी) से

बुतों की क़सम सादिर हो तो उस के लिये मुस्तहसन है कि "لا الـه الا اللّـه محمد رسول اللـه" उन बुरे कलिमात के कफ़्फ़ारे के तौर पर पढ़े और दूसरा एह्तिमाल यह है कि लात व उज़्ज़ा और बुतों की तअ़ज़ीम मकसूद हो।

इस सूरत में वह शख़्स मुरतद हो जायेगा और कलिमा–ए–ख़िलाफ़े इस्लाम से तबर्री(दूरी जाहिर करने) के साथ तजदीदे ईमान लाज़िम होगी और कलिमा तौहीद पढ़ना ज़रूरी होगा और अगर ग़ैरुल्लाह की क़सम में वह तअ़ज़ीम मुराद नहीं जो अल्लाह के लिये ख़ास है तो यह हक़ीक़तन शिर्क नहीं लेकिन सूरतन अहले शिर्क के फ़ेअ़ल से मुशाबा होने की सूरत की वजह से उस पर भी शिर्क का इतलाक़ आया और ज़जर व तशदीद(सख़्ती और अदब सिखाने)के तौर पर उस के मुरतकिब को भी मुश्रिक कहा गया।

इस सूरत में मुराद यह है कि उस शख़्स ने मुश्रिकों जैसा फ़ेअ़ल किया इस क़बील से बाप दादा, बेटे वग़ैरा के नसब पर तफ़ाख़ुर (गर्व करने)के तौर पर क़सम खाना है जैसा कि ज़माना–ए–जाहिलियत में रिवाज था हदीस में उस से भी मुमानअ़त आई।

अकूलु(ताजुश्शरिआ फ़रमाते हैं)हमारे तर्ज़े बयान से साफ़ मअ़लूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का एक एअ़राबी के मुतअ़ल्लिक़ "افلح وابيه ان صدق" फ़रमाना यअ़नी "यह फ़लाह को पहुँचा अपने बाप की क़सम अगर सच्चा है"मुमानअ़त के तह़त दाख़िल नहीं। बल्कि बयाने जवाज़ के लिये है।

गोया सर कार अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम अपने फ़ेअ़ल से यह बता रहे हैं कि बाप की क़सम खाना ना जाइज़ नहीं जब कि रस्मे जाहिलियत के तौर पर तफ़ाख़ुर के लिये न हो,न उस से तअ़ज़ीम मुफ़रित(ह़द से ज़्यादा इ़ज़्ज़त देना) कि ममनूअ़ है, मक़सूद हो और **एक एह्तिमाल** यह है कि ऐसी जगह ताकीदे कलाम और तक़वीयते

बयान(बयान में ज़ोर पैदा करना) मक़सूद होती है तो उस सूरत में क़सम शिर्क नहीं।

तम्बीह:ग़ैरुल्लाह से मुराद वह तमाम चीज़ें हैं जिन्हें शरअ़न अल्लाह व रसूल जल्ल व अ़ला व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से कोई अ़लाक़ा(तअ़ल्लुक़) नहीं न शरअ़न उन की कोई हुरमत है, न उन की तअ़ज़ीम का हुक्म नबी व रसूल कअ़्बा व मलाइका इस मअ़्ना कर ग़ैरुल्लाह में दाख़िल नहीं(अगर्चे बाबे ह़लफ़ में यह भी ग़ैरुल्लाह हैं मगर यह मुन्दरजा बाला के लिहाज़ से ग़ैरुल्लाह नहीं)कि शरअ़न उन की तअ़ज़ीम का हुक्म है।

अज़ाँ जा कि अल्लाह ने उन की तअ़ज़ीम का हुक्म दिया ता उन की तअ़ज़ीम अल्लाह ही की तअ़ज़ीम है उन की क़सम खाना ह़राम नहीं मगर उ़लमा ने ब मुक़तज़ा–ए–इह़्तियात (एहतियात के तकाज़े के तौर पर)इस त़रह़ की क़सम खाने को मकरूह कहा बल्कि उस से मुमानअ़त खुद ह़दीस में आई। क़समे शरई जिस का कफ़्फ़ारा लाज़िम है,वह अल्लाह की वह क़सम है जो अल्लाह की ज़ात से या उस की सिफ़ात से मुतआ़रिफ़ तौर पर खाई जाये।

ग़ैरुल्लाह की क़सम ,क़समे शरई नहीं। उ़लमा फ़रमाते हैं : अगर ग़ैरुल्लाह की क़सम को क़समे शरई जाने और उस का पूरा करना लाज़िम समझे इस सूरत में आदमी काफ़िर हो जायेगा।

इमाम राज़ी ने फ़रमाया :

"मेरी जान की क़सम[1] तेरी जान की क़सम, कहने वाले पर मुझे

1.आज कल लोग छोटी छोटी बातों पर तेरी क़सम, तेरी जान की क़सम, जैसी क़समें खाने लगते हैं हालाँकि ऐसी कसम खाने से उन्हें कोई फायदा नहीं पहुँचता बल्कि हजरत इमाम राज़ी के मुताबिक ऐसी कसम 'कुफ्र' से ज्यादा करीब है बअ़ज लोग बात बात पर "अगर मैं ऐसा न करूँ या ऐसा कहूँ तो ऐसा हो जाऊँ मसलन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त से महरूम हो जाऊँ या मेरा बेटा मर जाये या मैं कोढी हो जाऊँ " कह डालते हैं ऐसे लोग मजकूरा बयान से सबक हासिल करें। फारुकी गुफिरलहु

कुफ़्र का अन्देशा है और लोग आम तौर पर यह नादानी में कहते हैं अगर ऐसा न होता तो मैं कहता यह शिर्क है।

इमाम राज़ी के इस कौल से यह ज़ाहिर होता है कि ग़ैरुल्लाह की कसम को क़समे शरई जानने में उलमा के दो कौल हैं।

एक में आदमी मुतलकन काफ़िर हो जायेगा और दूसरा यह कि उस में अन्देश–ए–कुफ़ है यह दसूरा क़ौल मोहतातीन मुतकल्लिमीन की रविश पर है और उन का मज़हबे मुख़्तार व मोअ़तमद है जिस की तफ़सील आगे आरही है।

अकूलोः–(ताजुश्शरीआ फ़रमाते हैं)यह इस सूरत में है कि कहने वाला उसे क़समे शरई समझे और उस का पूरा करना ज़रूरी जाने और क़सम पूरी न होने की सूरत में कफ़्फ़ारा देना ज़रूरी क़यास करे। जैसे बअ़ज़ जाहिल अपने बच्चे की क़सम खाते हैं और उस का पूरा करना ज़रूरी समझाते हैं और न करने की सूरत में कफ़्फ़ारा लाज़िम ख़्याल करते हैं।

JANNATI KAUN?

अगर यह सूरत न हो यअ़नी क़ाइल उसे क़समे शरई न जाने न तअ़ज़ीमे मुफ़रित(हद से ज़्यादा तअ़ज़ीम करने) का क़स्द करे तो उस पर यह महजूर(हुक्म)लाज़िम नहीं आता **كما لا يخفى.**

और इस हदीस में ग़ैरुल्लाह की क़सम खाने वाले को जो मुश्रिक फ़रमाया गया उस से उस शख़्स का भी हुक्म ज़ाहिर जो यूँ क़सम खाये"अगर मैं यह काम करूँ **〈والعياذ بالله تعالىٰ〉** तो यहूदी या नसरानी या मिल्लते इस्लाम से बरी व बेज़ार हो जाऊँ"ऐसी क़सम खाना सख़्त हराम बदकाम कुफ़्र अन्जाम है।

बअ़ज़ उलमा ने इस पर मुतलकन क़ाइल को काफ़िर कहा मगर सहीह यह है इस मसअ़ला में वही तफ़सील है जो **"من حلف بغير الله فقد اشرک.** यअ़नी जो ग़ैरुल्लाह की क़सम खाये वह मुश्रिक है "में बयान हुई इस तफ़सील की तरफ़ ख़ुद दूसरी हदीसों में

इशारा है इरशाद हुआः

"من حلف على ملة غير الاسلام كاذباً فهو كما قال"

यअ्नी "जो मजहबे इस्लाम के अ़लावा किसी और मजहब की क़सम खाये दरॉं हालि(इस हाल में) कि वह इस क़सम में झूटा हो तो वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा।(मिरकात शरह मिश्कात जि. 6 स. 581)

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी लिखते हैं :

"कसे कि सोगन्द खुर्द बर दीन कि जज़ा–ए–इस्लाम अस्त–चुनॉके गोयद अगर ईं कार कुनम यहूदी बाशम या नसरानी शवम या बेज़ारम अज़ दीने इस्लाम या अज़ पैग़म्बर या अज़ कुर्आन(काज़िबन)दर हाल कि ब दरोग़ खूरन्दा अस्त ईं सौ गन्द रा चुनॉकि बकुनद ईं कार रा ज़ेरा कि ई सौगन्द बरा–ए–मनअे फ़ेअ़ल अस्त कि नकुनिन्दा पस सिदके वे बआँअस्त कि नकुनद अगर बकुनद काज़िब बाशद (فهو كما قال) पस आँ के हमचुनॉ अस्त कि गुफ़्त यअ्नी यहूदी व नसरानी या बरी अज़ दीने इस्लाम ज़ाहिर हदीस आंस्त कि काइ़ले ईं हदीस काफ़िर मीगरदद बमुजर्रद हलफ़ या बअ़द अज़ हिन्स अज जिहते इसकाते हुरमते इस्लाम "الخ" यअ्नी अगर कोई दीने इस्लाम के अ़लावा किसी दीन की क़सम खाये मसलन यूँ कहे कि अगर वह यह काम करे तो यहूदी, नसरानी या दीने इस्लाम से बेज़ार या पैग़म्बर या कुर्आन से बरी हो जाये और हाल यह हो कि वह झूटी क़सम खाये यअ्नी वह काम कर बैठे इस लिये कि क़सम खाना इस फ़ेअ़ल से बाज़ रहने के लिये है तो क़सम का सच्चा होना यह है कि वह काम न करे जिस के न करने की क़सम खाई थी अगर वह काम करेगा तो झूटा ठहरेगा हदीस में उस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा यअ्नी यहूदी या नसरानी या दीने इस्लाम से बरी इस हदीस का ज़ाहिर यह है कि ऐसी क़सम खाने वाला क़सम से काफ़िर हो जायेगा इस लिये कि उस

जिहत से कि उस ने हुरमते इस्लाम को साक़ित (इस्लाम की अ़ज़मत ख़त्म किया) किया और कुफ़्र पर राज़ी हुआ।

(अश्अ़तुललमआ़त शरहे मिश्कात जि. सोम स. 211)

बअ़ज़ उ़लमा ने नज़रे बर ज़ाहिरे इ़दीस(इ़दीस के ज़ाहिर को देखते हुए)ऐसी क़सम खाने वाले को मुत़लक़न काफ़िर कहा और बअ़ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि मुराद उस क़सम से यह है कि वह शख़्स अपने नफ़्स को तह़दीद और उस के वई़द में मुबालग़ा कर रहा है ताकि उस काम से अपने आप को बअ़ज़ रखे तो मक़सूद क़सम से बशिद्दते ज़ज्रे नफ़्स व तह़दीद है। लिहाज़ा हमारे नज़दीक वह जब तक क़सम न तोड़े मह़ज़ उस क़ौल से काफ़िर न ठहरेगा। इसी त़रह़ अगर फ़ेअ़्ले माज़ी(गुज़रे हुए काम)पर दीने इस्लाम से बराअ़त को मुअ़ल्लक़ किया तो मोइ़तात़ीन के नज़्दीक काफ़िर न रहेगा और बअ़ज़ मशाइख़ के नज़्दीक फ़ेअ़्ले माज़ी पर मुअ़ल्लक़ करने की सूरत में काफ़िर हो जायेगा।

मगर सह़ीह़ यही है कि उस सूरत में भी काफ़िरे मुत़लक़ न होगा इस लिये कि काफ़िर एअ़्तिक़ादे कुफ़्र से होता है और यहाँ ज़ाहिर यह कि उस की मुराद क़सम से ज़ज्रे नफ़्स और तह़दीद है यअ़्नी जब कि किसी फ़ेअ़्ले मुस्तक़बिल पर उस हुक्म को मुअ़ल्लक़ करे या बराअ़त को मुअक्कद त़ौर पर यक़ीन दिलाना है यह उस सूरत में है कि फ़ेअ़्ल माज़ी पर मुअ़ल्लक़ करे गोया वह बताना चाहता है कि यह काम उस के नज़्दीक ऐसा ही मकरूह व ना पसन्द है जैसा कि उस का यहूदी या नस़रानी या इस्लाम से बरी होना। इस लिये तह़दीदे नफ़्स के लिये ऐसी चीज़ पर मुअ़ल्लक़ किया जो इस के नज़्दीक मकरूह व मह़ज़ूर है।

अक़ूलोः—(ताजुश्शरीआ़ फ़रमाते हैं) ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी ने इस बाब में जो दूसरा क़ौल ज़िक किया वह

मोहतातीन(एहतियात) का है जो मुतकल्लिमीन की रविश पर है और उन की रविश यह है कि वह महज़ ज़ाहिर पर हुक्मे कुफ्र नहीं लगाते और कलाम में अदना एहतिमाल मानेअे तकफ़ीर(कुफ़ के ख़िलाफ़ ज़रा सा शक) हो उस का लिहाज़ करते हैं और क़ाइल को जब तक उस की मुराद ज़ाहिर न हो जाये काफ़िर कहने से गुरेज़ करते हैं और यह एहतिमाल जो उन उलमा को ऐसी क़सम खाने वाले पर हुक्मे कुफ़ लगाने से बाज़ रहने का मुक़तज़ी (चाहना)हुआ वह खुद हदीस से ज़ाहिर है कि फ़रमाया:

"अगर वह उस क़सम में झूटा हो तो वैसा ही है जैसा उस ने कहा"

जिस का साफ़ मतलब यह है कि अगर वह उस क़सम में सच्चा है और उसी मअ्ना–ए–कुफ़री का इबतिदाअन इरादा न किया हो (यअ्नी यहूदी या नसरानी होने पर अब उस से राज़ी होना)तो ऐसा नहीं जैसा कहा और उस एहतिमाल की तसरीह(सराहत) दूसरी हदीस में इरशाद हुई जो हज़रत बुरीदा से मरवी है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया : "जो यह कहे कि वह इस्लाम से बरी है(अगर यह काम करे)तो वह ऐसा ही है जैसा उस ने कहा और अगर वह उस क़सम में सच्चा है तो इस्लाम में गुनाह से सलामती के साथ न रहेगा।

इमाम क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फ़रमाया कि इस हदीस का ज़ाहिर यह है कि उस क़सम से उस का इस्लाम ज़ाइल हो जायेगा और वह वैसा ही हो जायेगा जैसा उस ने कहा और यह भी एहतिमाल है कि वह उस के काफ़िर होने को क़सम टूटने पर मुअल्लक़ करे। उस की दलील वह हदीस है जो हज़रत बुरीदा ने रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया:

"من قال انی بریئ من الاسلام فان کان کاذبا فھو کما قال.

यअ्नी " जिस किसी ने कहा मैं इस्लाम से बरी हूँ और अपने क़ौल में

झूटा हों तो वैसा ही है जैसा उस ने कहा" (मिश्कात शरीफ़ स. 296.297)

शायद इस से क़ाइल की मुराद(कहने वाले का मक़सद) नफ़्स की तहदीद(सख़्त अज़ाब) और ख़ुद को वईदे शदीद है न यह कि यह हुक्म लगाना कि वह अभी से यहूदी हो गया या इस्लाम से बरी हो गया तो गोया वह यूँ कह रहा है कि वह क़सम टूटने की सूरत में उसी उक़ूबत(सज़)का सज़ा वार है जिस का यहूदी मुस्तहक़ है और उस की नज़ीर हुज़ूर का यह क़ौल है :

"من ترك الصلاة متعمدا فقد كفر." यअ्नी "जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़े वह काफ़िर हो जाये"यअ्नी वह काफ़िर की उक़ूबत(सज़ा)का सज़ा वार है"(जामिउ़स्सगीर मअ फैजुलकदीर जि. 6 / 102)

हज़रत इमाम क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने हज़रत शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी की तरह यहाँ दो क़ौल ज़िक्र किये मगर सराहतन किसी क़ौल की सेहत का इफ़ादा न फ़रमाया अल्बत्ता दूसरे एहतिमाल की तौजीह व तअ़लील(वज़ाहत व वजह)इरशाद फ़रमाई जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि उन के नज़्दीक भी यही मुख़्तार है कि क़ाइल मुत़लक़न काफ़िर न ठहरेगा बल्कि क़सम टूटने की सूरत में रज़ा बिलकुफ़्र के तयक़्क़ुन(कुफ्र पर राज़ी रहने के यक़ीन) की वजह से काफ़िर होगा और यही ह़दीस का ज़ाहिर मफ़ाद(मक़सद) है कि उस के इस्लाम से बरी होने का काज़िब(झुटा)होने पर मुअ़ल्लक़ फ़रमाया तो वह इस बाब में न सिर्फ़ इरशादे उ़लमा से बल्कि ख़ुद ह़दीस से मअ़्लूम हुआ कि अगर मुस्लिम के कलाम में अगर मुतअ़द्दिद एह़तिमालात हों जो उस के कुफ़्र के मुक़तज़ी(चाहते)हों और एक वजह से उस के इस्लाम के मुक़तज़ी(इस्लाम ज़ाहिर हो)हों तो हम पर लाज़िम है कि एक वजह की त़रफ़ मैलान रखें और जब तक एह़तिमाल क़ाइम हो,मुसलमान को काफ़िर न कहें।

इस लिये रद्दुल मुह़तार में फ़रमाया :

"لا يفتى بكفر مسلم ان امكن حمل كلامه على محمل حسن او كان في كفره اختلاف ولو كان ذلك رواية ضعيفة.

यअ्नी" मुसलमान के काफ़िर होने का फ़तवा न दिया जायेगा जबकि उस के क़ौल व फ़ेअ्ल को अच्छे पहलू पर रखना मुमकिन हो या उस के कुफ़ में इख़्तिलाफ़ हो अगर्चे रिवायते ज़ईफ़ा हो।

(रद्दुल मुहतार,जि. 4 स. 229,230)

सुम्मा् अकूलो(अल्लामा अज़हरी फ़रमाते हैं)हमारे कलिमात जो अभी गुज़रे उन से साफ़ ज़ाहिर है कि हदीस का ज़ाहिर मफ़ाद (मक़सद) उस क़ाइल का बसुदूरे हिन्स (जब क़सम तोड़े)काफ़िर होना है न कि मुतलक़न काफ़िर होना तो उस सूरत में ज़ाहिर हदीस भी उस दूसरे क़ौल के क़ाइलीन के साथ है और क़ाइल के मुतलक़न कुफ़ के ज़ाहिर होने का दअ्वा महल्ले नज़र(ग़ौर करने का मक़ाम) है।

इस को ज़ाहिरन तस्लीम भी कर लें (ज़ाहिरी तौर पर मान भी लें)तो उस पर क़ाइल की तक्फ़ीर(काफ़िर कहना)उसी सूरत में मुमकिन है जब कि ज़ाहिरी मअ्ना के मुराद होने का एहतिमाल आश्कार (ज़ाहिर) हो और अगर क़रीना उर्फ़ या और कोई क़रीना इस बात पर क़ाइम हो कि क़ाइल ने वह मअ्ना–ए–कुफ़्री असलन मुराद(कुफ़री मअ्ना बिलकुलमुराद न लिये) न लिये तो उस सूरत में वह एहतिमाल ही न रहेगा और ज़ाहिर मतरूक(ज़ाहिर मअ्ना छोड़ दिये जायेंगे) ठहरेगा उस की बहुत मिसालें मुम्किन हैं।

आम बोल चाल में कहते हैं कि" फ़स्ले बहार ने सब्ज़ा उगाया ,हाकिम ने बचाया, उस मरज़ का यह शाफ़ी इलाज है, यह ज़हरे क़ातिल है" यहाँ इन सब मिसालों में मोमिन का ईमान ,उर्फ़ सब गवाह हैं कि उस की मुराद हक़ीक़ी मअ्ना जो लफ़्ज़ से ज़ाहिर है नहीं बल्कि इन तमाम मिसालों में सब की तरफ़ इस्नाद की गई है कि एअ्तिक़ाद मोमिन का यह है कि मुअस्सिरे हक़ीक़ी अल्लाह तआला है और यह चीजें खुद मुअस्सिर नहीं बल्कि अल्लाह के क़ाइम करदा अस्बाब हैं जिन में अल्लाह तआला ने यह तासीर रखी है।

यह वहाबिया का ज़ुल्म है कि इन आम मुहावरात से आँखें मीचते हैं और उन के बोलने को तो मुसलमान जानते हैं मगर उसी

तौर पर औलिया, अम्बिया के लिये जो मुसलमान तसर्रुफ व मदद साबित करे तो उसे मुश्रिक गर्दानते हैं। जिस में राज़ यह है कि उन के नज़्दीक औलिया दर किनार रसूल ही की तअ्ज़ीम शिर्क है जैसा कि "तक़वियतुलईमान " के मुतालअ् (पढ़ने)से ज़ाहिर है।

अअ्ला हज़रत अ़ज़ीमुलबरकत उन ही के हक़ में फ़रमाते हैं।

शिर्क ठहरे जिस में तअ्ज़ीम रसूल
उस बुरे मज़हब पे लअ्नत कीजिये

आमद बर सरे मतलब ! अब इस मसअ्ला ज़ाहिरा की तरफ लौटिये और तक़रीरे मुनदरजा बाला पर नज़र रख कर सोचिये जब कि क़ाइल की मुराद अपने नफ़्स को ज़ज्र व तहदीद और वईदे शदीद और उस मकरूह व महज़ूर काम पर मुअ़ल्लक़ करने से उस काम से इम्तिनाअ् व इज्तिनाब(मुहाल व परहेज़) की ताकीद ठहरी तो यह अगर उ़र्फ़ आदत से मअ्लूम हो तो ऐसी सूरत में वह ज़ाहिरी जिन का मफ़ाद मुतलक़न काफ़िर होना है न मुतहम्मिल न मुराद बल्कि क़तअ़न मतरूक हैं और उस के हक़ में ज़ाहिर बल्कि फ़ौकुज़्ज़ाहिर क़ाइल की वही मुराद है जो उ़र्फ़ व उस्लूबे मोअ्ताद से मअ्लूम हुई।

लिहाज़ा क़ाइल जब तक हानिस न हो काफ़िर न ठहरेगा। हाँ यह ज़रूर है कि ऐसी क़सम खाना सख़्त शनीअ् अशद हराम है जिस से क़ाइल पर तोबा लाज़िम है और एहतियात़न तजदीद ईमान भी ज़रूर ! (दुर्रे मुख़्तार जि. 4 स. 246,247 पर है)

"فیکون کفر ااتفاقا یبطل العمل والنکاح واولادہ اولاد الزنا و ما فیہ خلاف یومر بالا ستغفار و التوبۃ و تجدید النکاح ﴿ای تجدید الاسلام و تجدید النکاح﴾. यअ्नी "जो बात मुत्तफ़क़ अ़लैहि कुफ़्र (जिस बात के कुफ़्र होने में इत्तिफ़ाक़)है वह अमल को और निकाह को बातिल कर देती है और ऐसे शख़्स की औलाद औलादुज़्ज़ना है और जिस के कुफ़्र होने में इख़्तिलाफ़ है,उस में क़ाइल को तौबा (तजदीदे ईमान)तजदीद निकाह का हुक्म है।

रही यह बात कि बसूरते ह़िन्स(क़सम तोड़ने की सूरत में) उस पर कफ़्फ़ारा है या नहीं तो अइम्मा ह़न्फ़िया का मज़हब यह है कि क़सम तोड़ने की सूरत में उस पर कफ़्फ़ार–ए–क़सम लाज़िम होगा जब कि किसी फ़ेअ़्ले आइन्दा पर क़सम को मुअ़ल्लक़ किया हो और उसकी नज़ीर तह़रीमे मुबाह़ है यअ़्नी किसी फ़ेअ़्ले मुबाह़ को अपने ऊपर बज़रिअ़ा क़सम ह़राम कर ले तो अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम से फ़रमाया :

"يٰاَيُّهَا النَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ." यअ़्नी ऐ ग़ैब बताने वाले(नबी)तुम अपने ऊपर क्यों ह़राम किये लेते हो वह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये ह़लाल की'' सूरए तह़रीम पारा 28/आयत1)

सय्यदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ह़ज़रत उम्मुलमोमिनीन ह़फ़्स़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के मह़ल में रौनक़ अफ़रोज़ हुये। वह हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद ह़ज़रत उ़मर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इ़यादत को तशरीफ़ ले गयीं। हुज़ूर ने ह़ज़रत मारिया किब्तिया को सर फ़राज़े ख़िदमत फ़रमाया। यह ह़ज़रते ह़फ़्स़ा पर गिराँ गुज़रा हुज़ूर ने उन की दिल जोई के लिये फ़रमायाःमैं ने मारिया को अपने ऊपर ह़राम किया और मैं तुम्हें खुश ख़बरी देता हूँ कि मेरे बअ़्द उ़म्मत के मालिक अबूबक्र व उ़मर होंगे वह उस से खुश होगयीं और निहायत खुशी में उन्हों ने यह तमाम गुफ़्तुगू ह़ज़रत आ़इशा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को सुनाई उस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई :

इस आयत के मुत्तसि़ल सर कार से यह इरशाद हुआः

"قد فرض الله لكم تحلّة ايمانكم." बे शक अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी कसमों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया''

(पारा 28 सूरए तहरीम आयत 2 कन्जुलईमान)

उस त़रह क़सम खाकर कि वह अगर यह काम करे''तो वह

यहूदी या नस़रानी है'' अपने एअ्तिक़ाद में मुबाह़ को ह़राम ठहरा लिया। लिहाज़ा बसूरत हिन्स यहाँ भी कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा। यह उस सूरत में है जब कि किसी फ़ेअ्ले आइन्दा पर ऐसी क़सम खाई जाये और अगर फ़ेअ्ले माज़ी पर ऐसी क़सम खाई और इस क़सम में वह शख़्स़ झूटा था तो इस सूरत में कफ़्फ़ारा नहीं मह़ज़ तोबा लाज़िम है और एह़्तियातन तजदीदे ईमान तजदीदे निकाह़ भी ज़रूरी है।

इस क़िस्म की क़सम उ़र्फ़ में ''यमीने ग़मूज़'' कहलाती है और उस में भी ह़स्बे साबिक़ दो क़ौल हैं पहला यह कि वह शख़्स़ मुत़लक़न काफ़िर ठहरेगा और इस सूरत में ज़ाहिर ह़दीस ''कि फ़रमाया अगर वह झूटा इला आख़िरिही''उस का क़ौल शदीद है और दूसरा क़ौल यह कि मह़ज़ क़सम मुराद ली तो काफ़िर न होगा।

यहाँ तक कसम की दो किसमें बयान हुईं और तीसरी क़िस्म ''यमीने लग्व़''है यअ्नी ग़लत़ फ़हमी में किसी बात पर क़सम खाई और वाक़िआ उस के गुमान के ख़िलाफ़ हो मसलन यूँ कहे ''ख़ुदा की क़सम मैं ने ज़ैद से बात न की'' ''ख़ुदा की क़सम मैं घर में दाख़िल हुआ'' इस का हुक्म यह है कि उस में न गुनाह न कफ़्फ़ारा।

قال الله تعالیٰ.

''لا یُؤاخِذُ کُمُ اللّٰہُ باللَّغوِ فِیۡ اَیۡمَانِکُمۡ وَلٰکِنۡ یُّؤَاخِذُ کُم بِمَا عَقَّدْ تُمُ الاَیۡمَانَ. यअ्नी अल्लाह तुम्हें नहीं पकड़ता तुम्हारी ग़लत़ फ़हमी की क़समों पर हाँ उन कसमों पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुमने मज़बूत किया''(सुरए माइदा पारा 7 आयत 89 कन्ज़ुल ईमान)

यहाँ तो ग़ैरुल्लाह की क़सम के मुतअ़ल्लिक तफ़सीली अह़काम बर वजह तमाम हुई और ख़ुद अल्लाह के असमा व सिफ़ात की क़सम खाना सख़्त मह़ल्ले इह़तियात है लिहाजा इस में भी ज़्यादती न चाहिये।

ह़दीस शरीफ़ में आया :

"من کان حالفاً فلیحلف باللہ او لیصمت" यअ़नी "जो क़सम खाने का इरादा करे तो अल्लाह की क़सम खाये या चुप रहे"(फ़ैज़ुलक़दीर जि. 6 स. 207)

और अकसर अह़वाल में अल्लाह की क़सम खाने से बअ़ज़ रहना और नाम इलाही को इब्तिज़ाल(हलका जानना) से मुक़तज़ा–ए–इहतियात है और बकसरत अल्लाह की क़सम खाना जुरअ़त व बे बाकी है।

इसी लिये क़ुर्आने करीम में फ़रमाया :

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ. यअ़नी "और अल्लाह को अपनी क़सम का निशाना न बनालो"(सुरए बक़ पारा 2 आयत 224 कन्ज़ुलईमान)

मुफ़स्सेरीन ने इस आयत के मअ़ना यह बताये कि अल्लाह के नाम को निशाना न बनाओ और जा व बे जा उस को मुबतज़ल न करो कि तुम नेको कार रहो जब नादिरन क़सम खाओ और गुनाह से बचो जब कि तुम्हारी क़समें कम हों। इस लिये कि क़समों की कसरत नेकी और तक़वा से दूर करती है और गुनाह और अल्लाह के ह़ज़ूर बे बाकी से क़रीब करती है।

चुनाँचि अ़ल्लामा जस़्सास़ राज़ी फ़रमाते हैं:

"فالمعنی لا تعترضوااسم اللہ و تبذلوہ فی کل شئ لان تبر و اذا حلفتم و تتقواالمأثم فیھا اذا قلت ایمانکم لان کثرتھا تبعد من البر وا التقویٰ و تقرب من المأثم و الجرأۃ علی اللہ تعالیٰ "(احکام قرآن جلد اوّل ص ۳۵۴)

"तो मत़लब यह है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला तुम को कसरते क़सम से मनअ़ करता है और बे बाकी से बाज़ रखता है इस लिये इस से बाज़ रहने में ही नेकी व परहेगारी और तुम्हारी इस्लाह़ है"।

जब आदमी बग़ैर त़लब के गवाही में सबक़त करे

यअ़नी बातिल गवाही दे जैसा कि"मजमअ़ बिहारुल अन्वार"में है:

يأتى قوم يشهدون و لا يستشهدون هذا عام فيمن يؤدى الشهادة **قبل أن يطلبها صاحب الحق فلا يقبل ،و ماقبله خاص ،قيل هم الذين يشهدون بالباطل.** यअ़नी "एक ऐसी क़ौम आयेगी जिस के लोग गवाही देंगे और उन से गवाही त़लब नहीं की जायेगी यह आ़म है उस में कि गवाही पूरी कर ले साहिबे हक़ के त़लब करने से पहले क़बूल नहीं होगी और यहाँ क़ब्लियत ख़ास है और कहा गया कि उस से मुराद वह लोग हैं जो झूटी गवाही दें"। (मजमअ़ बिहार जि. अव्वल स. 270)क़रीना व मक़ाम उस का मुक़तज़ी[1] है।

---

1. हदीसे पाक में है : **خير الناس قرنى ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم ثم يفشو الكذب حتى يشهد الرجل و لا يشهد و يستحلف الرجل و لا يستحلف.** यअ़नी "फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने : सब से बेहतर मेरा ज़माना है फिर जो उस से क़रीब है फिर जो उस से क़रीब है फिर झूट की कसरत हो जायेगी यहाँ तक कि आदमी गवाही देगा बग़ैर उस के कि गवाही त़लब की जाये और आदमी ह़ल्फ़ लेगा बग़ैर उस के कि उस से ह़ल्फ़ लिया जाये"(तिर्मिज़ी शरीफ़ जि. दोम स. 54/फ़ारूक़ी ग़ुफ़िरलहु.

जब ओ़हदे मीरास हो जायें

मुराद उस से वह लोग हैं जो मह़ज़ बाप दादा की वरासत से अमीर व वाली बन बैठें और मुसलमानों के मुआ़मलात और उन के बिलाद के खुद साख़्ता ह़ाकिम हो जायें बग़ैर उस के कि ख़वास़ अशराफ़ (शरीफ लोग)व अहले इल्म कि अरबाबे ह़िल व अ़क़्द हैं। बे जब्र व इकराह अपने इख़्तियार से उन के मुआ़विन हों न ऐसे लोगों से मशवरा लिया जाये न यह अमीर बैठने वाले उस के मुस्तह़क[1] हुए यह शरअ़न मज़मूम व ममनूअ़् है और उस हुक्मे मनअ़् व मज़म्मत के उ़मूम में वह लोग भी दाख़िल हैं। जिन को अ़वाम अरबाबे ह़िल व अ़क़्द को नज़र अन्दाज़ कर के चुन लें और बदरज–ए–औला वह लोग उस के मिस्दाक़ हैं जो खुद को चुनवाने के लिये खड़े हुये हैं।

"मजमउ़लबिह़ार" में एक ह़दीस़ लिखी जिस का मज़मून यह है कि उस से बढ़ कर बड़ा ख़ाइन कोई नहीं जो ग़ैर अस़्ह़ाबे राय अ़वाम का मुन्तख़ब अमीर हो।

JANNATI KAUN?

इस ह़दीस की तस़्दीक़ ज़माना–ए–ह़ाल में चुनिन्दा और चुनीदा के अह़वाल से ख़ूब ज़ाहिर है। लिहाज़ा इस पर मज़ीद तब्स़रे की ज़रूरत नहीं और ह़दीसे मुन्दरजा बाला के मिस्दाक़ वह लोग भी हैं जो बुज़ुर्गों के जानशीन मह़ज़ वरासत के बल पर बग़ैर इस्तिह़क़ाक़ बे इन्तिख़ाबे शरई बन बैठे हैं जैसा कि ज़माना–ए–ह़ाल में मुशाहिदा है।

---

1. ह़दीसे पाक में है : اذا وسّد الأمر اى يلى الخلافة او القضاء او الأمارة من ليس باهل فانتظر الساعة. यअ़नी जब काम मसलन ख़िलाफ़त या कज़ा या अमारत ना अहलों के सुपुर्द हो जाये तो कयामत का इन्ज़िार करो" मजमउ़लबिहार जि. अव्वल स. 101 फारूकी गुफिरलहु.

जब मर्द मर्दों पर और औरतें औरतों पर इक्तिफ़ा करे

उस की तफ़सील दूसरी ह़दीस में इरशाद हुई जिस को ख़तीब और इब्ने अ़साकिर ने ह़ज़रत वासि़ला और अनस से रिवायत किया कि सरकार अ़लैहिस़्स़लातु वस्सलाम ने फ़रमाया : दुनिया उस वक़्त तक फ़ना न होगी जब तक औ़रतें औ़रतों पर और मर्द मर्दों पर इक्तिफ़ा न करें और "السحاق" औ़रत का औ़रतों से बाहम मुबाशरत करना,औ़रतों का आपस में ज़िना है।

ह़दीस के अल्फ़ाज़ यह हैं जो क़न्ज़ुलउ़म्माल जि. 14 स. 226 पर मौजूद हैं:

"لا تذهب الدنيا حتى يستغنى النساء بالنساء و الرجال بالرجل،والسحاق زنا النساء فيما بينهن"

और तीसरी ह़दीस ह़ज़रत उबै से मरवी है फ़रमाया कि हम से कहा गया इस उम्मत के पीछे लोगों में क़यामत के क़रीब कुछ चीज़ें ज़ाहिर होंगी। उन में से यह है कि आदमी अपनी बीवी से या कनीज़ से उस के दुबुर[1] में

1.आज कल अमरीका में यह मर्ज़ आम है उन का इस्तिदलाल यह है कि हम ने निकाह़ किया है जिस से बीवी के जिस्म का हर हिस्सा शौहर पर ह़लाल हो जाता है तुरफ़ा यह कि वहाँ की औ़रतें खुद अपनी रगबत से उस क़बीह़ फ़ेअ़ल का इरतिकाब कराती हैं जो सख़्त ह़राम है और जो लोग ऐसा करते हैं सख़्त गुनाहगार और मुस्तह़क़े ग़जबे जब्बार हैं उन पर अपने उस फ़ेअ़ल से तौबा व इस्तिग़फ़ार वाजिब।

चुनाँचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : اتى حائضا او امرأة فى دبرها فقد كفر بما انزل على محمد صلى الله تعالىٰ عليه و سلم यअ़नी जो शख़्स अपनी बीवी से ह़ालते ह़ैज़ में या उस की दुबुर में जिमाअ़ करे बे शक उस ने कुफ़्र किया उस के साथ जो मुह़म्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ अह़कामुलकुर्आन जि. अव्वल स.353(फ़ारूक़ी)

जिमाअ् करे और यह उन अअ्माल में से है जिन को अल्लाह और रसूल ने ह़राम किया और उस पर अल्लाह व रसूल का ग़ज़ब है और उन्हीं में से मर्द[1] का मर्द के साथ स़ोह़बत करना और यह उन बातों में से है जिन को अल्लाह व रसूल ने ह़राम किया और उन्हीं में से[2] औरत का औरत के साथ मुबाशरत करना और यह उन अअ्माल में से है जिन को अल्लाह व रसूल ने ह़राम किया और उस पर अल्लाह व रसूल की नाराज़गी है इला आख़िरिही.(उस के आख़िर तक)

ह़दीस के अल्फ़ाज़ यह हैं जो कन्जुलउम्माल जि. 14 स. 575 पर मौजूद हैं :

”عن ابی قال قیل لنا أشیاء تکون فی آخرهذه الامة عند اقتراب الساعة فمنها نکاح الرجل امرأته و امته فی دبرها و ذلک مما حرم الله و رسوله و یمقت اللّٰه علیه و رسولهٗ و منها نکاح الرجل الرجل و ذلک مما حرم الله علیه و رسوله و منها نکاح المرأة المرأة و ذلک مما حرم الله و رسوله و یمقت الله علیه و رسوله صلی الله علیه و سلم“

सरकारे दो आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने क़ुर्बे क़यामत की जो निशानियाँ बयान फ़रमायीं उन में से अकसर अ़लामतें वाक़ेअ् हो चुकीं जिस पर मुशाहिदा शाहिदे अ़द्ल है और जो बाक़ी हैं वह भी ज़रूर वाक़ेअ् होंगी वल्लाहु तआ़ला अअ्लमु

1.यह इस क़द्र क़बीह और नापाक फ़ेअ्ल है कि अगर लूती तमाम समन्दरों के पानी से ग़ुस्ल करे तब भी पाक नहीं होगा फ़रमाया रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कि : अल्लाह तआ़ला लवात़त के मुरतकिब को क़ब्र में ख़िन्ज़ीर बना देता है उस के नथनों में आग सी घुरती है और पीछे से निकलती रहती है (नुज़्हतुल मजालिस जि. 2 स. 62)फ़ारूक़ी.

2.जिस तरह मर्दों में लवात़त का मर्ज़ तेज़ी से बढ़ रहा है उसी त़रह अब औरतों में भी हम जिन्स परस्ती बढ़ती जा रही है और तुरफ़ा तो यह कि योरोप के अक्सर ममालिक में उसे क़ानूनी दर्जा ह़ासिल है और वहाँ हम जिन्स परस्त औरतें और मर्द आपस में बे झिझक कोर्ट मैरेज कर रहे हैं इस तरह हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की यह पेशीन गोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ सच साबित हो रही है (फ़ारूक़ी ग़ुफ़िरलहु)